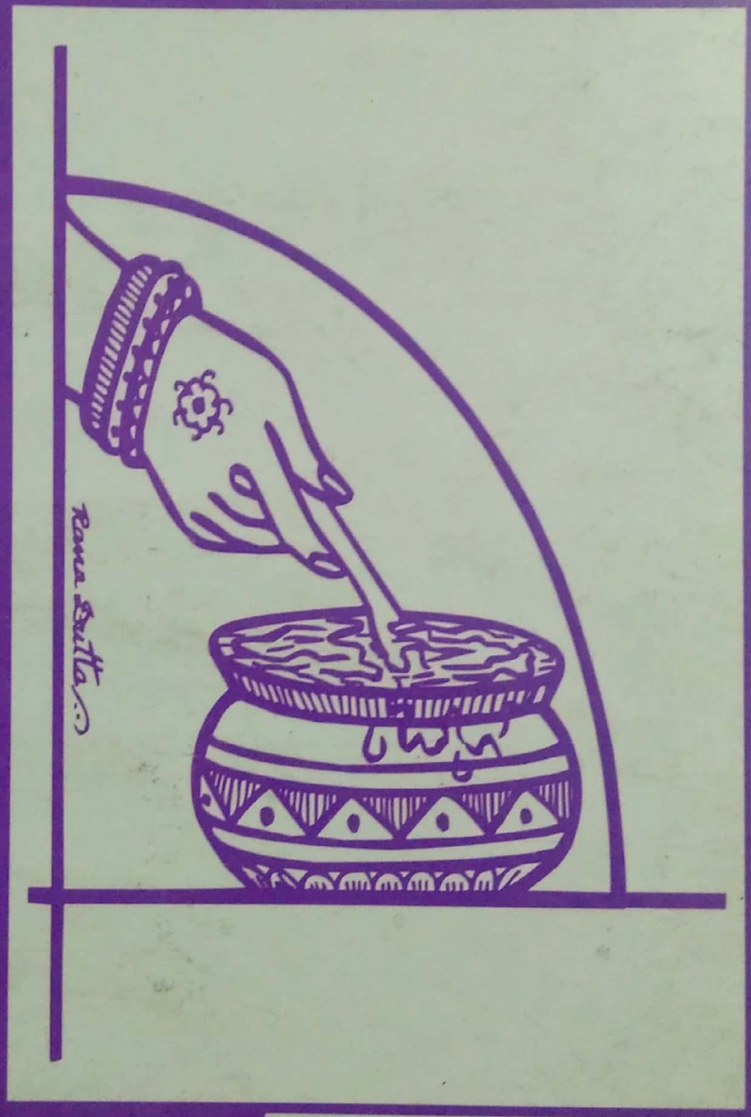
दहीक मुँइचा



श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

दहीक खुइँचा

[लघु कथासंग्रह]

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नवरत्न–गोष्ठी
आदित्य सदन
मिश्रटोला, दरभंगा

DAHIK KHUEICHA

SRI CHANDRANĀTH MISHRA 'AMAR'

प्राप्ति स्थान :

आदित्य सदन
मिश्रटोला, दरभंगा- 846004
दूरभाष : 06272-223485

पहिल खेप : नवम्बर, 2007

प्रति : 300

मूल्य : पचास टाका मात्र

मुद्रक : प्रिंटवेल,
टावर चौक, दरभंगा
दूरभाष : 06272-248421

कहबाक अछि जे...

अंगरेजीमे सम्पूर्ण कथा साहित्यकें फिक्शन कहल जाइत छैक । हमरा लोकनि जकरा पहिने गल्प कहैत छलिऐ, बादमे हिन्दीक देखाउँसमे कथा कहऽ लगलिऐ, तकरा अंगरेजीमे शार्ट स्टोरी कहल जाइत छैक । एकर अर्थ ई भेल जे हम सब जकरा लघुकथा कहैत छिऐक से अंगरेजीक हिसाबसँ लघुतर कथा भेल ।

हमरा जहाँ धरि ज्ञात अछि, 17.12.37क मिथिला मिहिरक अंकमे चिर स्मरणीय सुमनजी लघुकथाक प्रथम प्रयोग कयने छलाह ।

उपन्यासक माध्यमें सम्पूर्ण चरित्रकें चित्रित कयल जाइछ आ कथाक माध्यमसँ चरित्रक एकांश उजागर होइत अछि ।

जेना कोनो मन्दिरमे दर्शनार्थ भीतर गेलहुँ तँ मूर्तिक संग मन्दिरक अन्तरंगोक दर्शन होइत अछि, तँ से उपन्यासक विषय भेल ।

कोनो एहन परिस्थिति आयल जखन मन्दिरक सोझाँ बाटें गुजरि रहल छी, भीतर जा कऽ दर्शन करबाले नहि जा भेल, बाटे पर सँ हाथ जोड़ि, माथ झुका प्रणाम कऽ लेल । तँ से कथाक विषय भेल ।

मन्दिर सड़कसँ दूर पर छैक, एक झलक मात्र भेटल तँ से लघुकथाक विषय भेल, परन्तु ईहो स्थिति होइत छैक जे सम्पूर्ण मन्दिरो देखि नहि पड़ैछ, मात्र ओकर शिखर आ त्रिशूलक दर्शन भेल, हमरा जनैत से लघुतर कथाक विषय मानल जयबाक चाही । अर्थात् सम्पूर्ण चरित्रक चित्रण उपन्यासमे, एक अंशक चित्रण कथामे एकांशक किछु अंश मात्र लघुकथामे वर्णित होइत अछि ।

हम 1950 ई०मे वैदेहीक किछु अंकमे एहूसँ लघु रूपक प्रयोग 'गल्पक प्रपौत्र' नामसँ कयने छलहुँ । अंगरेजीक मान्यताक अनुसारें जखन हमरा सभक कथे लघुकथा भेल तखन उपर्युक्त प्रयोगकें लघुतरो नहि, लघुतम कहल जा सकैछ ।

कथा विधा सब दिनसँ लोकप्रिय विधा रहल अछि, एखनहुँ शीर्ष पर अछि ।

ई जनैत, ई देखैत तथा भोगैत रहितो जे पोथी छपायब, श्रीजीवकान्तजीक शब्दमे मैसूरक महाराजक अनुकम्पा प्राप्त व्यक्तिकेँ अपवाद मानैत शेष लोकक हेतु महिखामे मूड़ी देब थीक । तथापि वारंवार उक्खरिमे मूड़ी देल करैत छी से किएक ? ओना मैथिलीक कोनो उपाधिक बलेँ हमरा जीविका नहि भेल । ताहि हेतु संस्कृतेक उपाधि आधार छल, परन्तु जीवन-यापनक क्रममे संवल कही वा पाथेय से मातृभाषेक सेवा बनल रहल । तेँ मैथिलीक हम अपनाकेँ ऋणी मानैत छी । एहि ऋणसँ मुक्ति ने ककरो भेलैक अछि, ने भऽ सकैत छैक, किन्तु कमसँ कम सूदिओ तँ सधाय आत्म सन्तोष कयल जाय ।

लघुकथाक विकास द्रुतगतिएँ होयबाक कारण हमरा जनैत थिकै- विज्ञानक प्रसादेँ भौतिक सुख-साधनक नव-नव आविष्कार आ ओ सुख-साधन अल्प श्रमसँ प्राप्त करबाक महत्त्वाकांक्षा, ताहि हेतु अस्त-व्यस्त जीवनमे समयक घोर अभाव, तेँ पढ़बाक इच्छा रखनिहार व्यक्तिकेँ दोग-दागमे मानसिक श्रान्ति मेटयबाक हेतु दस-पाँच मिनटमे पढ़ि लेबाक योग्य ई विधा परम उपयुक्त होइत छनि । एहन संग्रह ओहने-ओहने पाठकक कर-कमलमे उपहृत । विशेष रूपेँ ओहि सुकोमल कण्ठधारी लेखक लोकनिक हेतु जनिका मुँहमे कण्ठ चँछा जयबाक डरेँ रसगुल्लाक 'छिलका' छीलि कऽ देल जाइत छनि । जाहि कण्ठसँ दृष्टिकोणक स्थान पर 'नजरिया' वातावरणक स्थान पर 'माहौल' आ सर-सम्बन्धी'क स्थान पर 'सगा सम्बन्धी' सन शब्दावलीसँ मैथिलीक गोत्र बदलल जा रहल अछि ।

साओनमे भेल आन्हरकेँ जेना सब हरियरे बुझाइत छैक तहिना बैमानकेँ संसारमे सब बैमाने बूझि पड़ैत छैक । तेहन लोकक कण्ठकेँ तँ ई दहीक खुँइचा चँछबे करतैक ।

एहि लघुतर कथाक संकलनमे पत्र-पत्रिकाक फाइलसँ झोरि-झारि कऽ कुल 28 गोट लघुकथा संकलित भेल अछि जाहिमे बाइस गोट बासि नहि अछि प्रत्युत एकदम टटके अछि, 3 गोट सेरायल तथा 3 गोट तत्काल उपलब्ध 'गल्पक प्रपौत्र' सेहो अन्तमे देल गेल अछि । जँ पाठक वर्गकेँ किछुओ आनन्द भेटि सकलनि तँ अपन श्रमकेँ सार्थक बुझब । हँऽ नढ़री-उढ़रीएक कथामे जनिका रुचि छनि तनिक निराशाकेँ दूर करबाक सामर्थ्य हमरा कलमकेँ नहि छैक । जनिक नामसाम्य मातृ भाषाक सेवा करबाक प्रेरणा देलक, ओहि कवीश्वर चन्दा (चन्द्रनाथ) झाक पुण्यशती वर्षक अवसर पर ओही महामनाक पुण्य स्मरणकेँ समर्पित ।

अन्तमे समय पर छापि देबा लै श्रीसंजय ओ श्रीअरुण जीकेँ धन्यवाद आ सहयोगक हेतु सर्वश्री प्रवीणजी, लूटन, नटवर ओ विभु तथा मुख पृष्ठ सयबा लै श्रीराणा दत्ताकेँ आशीर्वाद ।

8 दिसंबर, 2007

–श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

अनुक्रम

दहीक खुइँचा

विद्वान लोकनिक एक-दू-दिना विचार गोष्ठी छलनि । जेना कोनो विशाल बड़ बा पाकड़िक गाछपर साँझ पड़ैत चारू भागसँ चिड़ै-चुनमुन्नी आबि जाइत अछि तहिना दूर-दूरसँ विद्वान लोकनि ओहि धर्मशालामे जतऽ सबकेँ आवासक व्यवस्था छलनि, पहुँचऽ लगलाह ।

सबसँ पहिने जे प्रोफेसर साहेब पहुँचलाह तनिका आयोजनक कार्यकर्ता आबि पुछलकनि– रातिमे भोजन की बनाओल जाय ? भात-दालि अथवा पूरी-तरकारी ?

ओ कहलथिन– ने भात-दालि ने पूरी-तरकारी, सबलै सुक्खी-रोटी, रसदार तरकारी । छनुआँ पूरी लगले सभक पेट खराब कऽ दैत छैक ।

कार्यकर्ता-सुक्खी रोटी सबकेँ सूट करतनि ?

प्रोफेसर-डालडा तँ सबकेँ 'शूट' करतनि, सुक्खी रोटी सूट नहिओ करनि, मुदा 'शूट' तँ नहिएँ करतनि । कार्यकर्ता बेचारा एहन वरिष्ठ प्रोफेसरक बात कोना कटितनि तेँ सुक्खी रोटी बनौलक । मुदा चिक्कस नहि रहैक तेँ मैदाक रोटी पका लेलक । तरकारी झँसिगर रहैक । भोजनक बेर होइत-होइत दस एगारह व्यक्ति, जे गोष्ठीमे भाग लेनिहारमे छलाह, बेराबेरी पहुँचैत रहलाह ।

भोजनक बेरमे ओ मैदाक खपटी रोटी आ मेरिचाइ घोरल तरकारीक झोर दुइए चारि कओर खाइत-खाइत कंठमे खौंत देबऽ लगलनि आ ठोर भकभकाय लगलनि । वरिष्ठ प्रोफेसर कहलथिन दही परसिए दिऔ, तरकारी बड़ कड़ू भऽ गेल अछि । कार्यकर्ता बाजल– श्रीमान् दही तँ तेहन खोआयब जे अपनहु दंग रहि जायब, मुदा एखन नहि, काल्हि भिनसरसँ ।

प्रोफेसर-एखन किएक नहि ?

कार्यकर्ता-दही देहातमे पौराओल गेलैक आ कनेक अबेर कऽ जोड़न पड़लैक तेँ नीक जकाँ जनमि नहि सकलै । भरिया तँ आब भेटैत नहि छै, तेँ ठेला पर अनने डोलि जइतैक ।

प्रोफेसर-दही नहि डोलक चाही, मुदा बीयनि डोलयबामे कोनो क्षति ? तेँ बीयनिए डोला दिऔक । ई कहैत प्रोफेसर साहेब बीचे पाँतीसँ उठि गेलाह । देखा-देखी सब उठि गेल । कार्यकर्ता सभक मुँह बिधुआ गेलैक । सब भुखले रहि गेल । कछमछकऽ राति कटलक ।

भिनसरे तीनटा ठेलापर तीस खोर दही भंडारघरकेँ भरि देलकै । 10 बजेसँ पहिल बैसक छलै । जलपानमे चूड़ा-दही-चीनी आ तरकारी चलयबाक निर्णय भेलै ।

कार्यकर्तामे वरिष्ठ लोक एहि वरिष्ठ प्रोफेसर साहेबसँ रातिएसँ छनगल छलाह । हुनकं कहलापर राति सुक्खी रोटी बनबौने छलथिन । मनमे कचोट रहनि । रातुक त्रुटिक मार्जन हेतु जलखैमे आग्रह पूर्वक अपने दही परसऽ लै छाँछ उठौलनि । पाँतीमे पहिल एकटा कवि जी रहथि दोसर वरिष्ठ प्रोफेसर तकर बाद 10-12 गोटे आन लेखक साहित्यकार लोकनि । कार्यकर्ता प्रमुख छाँछक पहिल छओ काटि वरिष्ठ प्रोफेसरकेँ देबऽ चाहैत छलथिन मुदा पाँतीक पहिल आसन कविजी दफानने रहथिन । असमंजसमे पड़ि गेलाह । अन्तत: सरबासँ छाल्हीकेँ टारि पहिल छओ काटि कवि जीक पातपर दऽ देलथिन आ आगाँ बढ़ि गेलाह । वरिष्ठ प्रोफेसर तुरन्त टोकलथिन- दही एक छओ नहि परसल जाइत छैक । परसनिहार सरबाकेँ तर दिस घोंसिया दोहरयबाक विधि पूरा कयलनि आ छल्हिगर अंशके समेटैत डबल सरबा वरिष्ठ प्रोफेसरक पात पर दैत दोसर सरबामे अगिलो किछु छाल्ही लऽ उझिलि देलथिन । से देखि, सभक ध्यान अपना दिस आकृष्ट करैत कविजी बाजि उठलाह- एहि बारिक (परसनिहार)क नजरि सेहो बड़ बारीक (सूक्ष्म) छनि । हमरा कतेक आदर दैत छथि से साफ झलकि रहल अछि ।

एक नोथारी टोकि देलथिन- से को कवि जी ? कविजी कहलथिन- हमरा पर एहि बारिककेँ ततेक सिनेह छनि जे हमरा पातमे दहीक खुइँचा सोहि कऽ सवा छओ आ प्रोफेसर साहेबक पातमे खुइँचा लगले दूनू छओ उझिलि देलथिन अछि । बारिक तँ कने लजा गेलाह मुदा शेष लोक अपन हँसी रोकि नहि सकल । सबकेँ हँसैत देखि कविजी कहि उठलथिन- दहीक खुँइचा होइतो छै सक्कत, मजगूत दाँत चाही । ◆

ई फूसि कोना भेलै ?

एकटा विद्यार्थी रहय जकर सोच-विचार साधारण लोकसँ कने भिन्न रहैक। पढ़बाक इच्छा बड़ प्रबल रहैक, मुदा गोड़ी कतहु नहि बैसैत रहैक। गोड़ी नहि बैसबाक कारण ई रहैक जे ओ एहन गुरुसँ पढ़ऽ चाहैत रहय जे कहियो फूसि नहि बाजल होथि। जखन कोनो विद्वान लग पढ़बालै पहुँचय तँ ओहि विद्वानसँ पहिल प्रश्न ई करनि जे अपने कहियो फूसि नहि जे बाजल छी ?

एकटा विद्वान विद्यार्थीक ई प्रश्न सुनिकऽ उत्तर देलथिन जे बाउ ! हम कोनो हरिश्चन्द्र नहि छी जे दृढ़ता पूर्वक कहि सकी जे कहियो हम फूसि नहि बाजल होयब। हँऽ एतबा कहि सकैत छी जे फूसि नहि बाजी से चेष्टा रहैत अछि।

विद्यार्थी हुनकर उत्तर सुनि पोथी-पतड़ा समटि विदा भऽ गेलाह। पता लगबैत बौआइत दोसर गाम दोसर विद्वान लग गेलाह। थाकल पियासल विद्यार्थीकेँ देखि विद्वान पहिने अतिथि-सत्कार कयलथिन। सुस्तयलाक बाद उद्देश्य पुछलथिन।

विद्यार्थी अपन अयबाक प्रयोजन कहैत हिनको पुछलथिन– अपने कहियो फूसि नहि जे बाजल छी ?

विद्वान कनेक गहिकी नजरिसँ चेहरा देखि जबाब देलथिन– बाउ ! ई कलियुग थिकै, द्वापर नहि जे हम अपनाकेँ युधिष्ठिर बूझि लिअऽ। विद्यार्थी ई कहैत उठिकऽ विदा भऽ गेलाह जे हमर संकल्प अछि जे हम तनिकेसँ पढ़ब जे फूसि नहि बाजल होयताह।

फेर बौआइत-बौआइत तेसर विद्वानक ओतऽ पहुँचलाह। हुनकोसँ अपन संकल्प कहैत पुछि बैसलथिन– अपने कहियो फूसि नहि ने बाजल छी।

तेसर विद्वान विद्यार्थीकेँ नीचासँ ऊपर धरि देखि मनहिमन सोचलनि जे एहन लोक निश्चय ढहलेल होइत अछि।

धरतीपर के एहन लोक एकरा भेटतैक जे एको बेर फूसि नहि बाजल होयत। कमसँ कम कोनो कनैत नेनाकेँ चुप करयबा लै लोक कहैत छैक-बौआ नहि कान, ने तँ लतामक गाछपर घेघी छै से आबिकऽ धऽ लेतौ। ईहो तँ फुसिए भेलैक। एहन स्थितिमे ई मूर्खे रहि जायत। एकरा कतबो बुझयबै जे एहन लोक कतहु नहि भेटत से ई मानत नहि, तेँ कहलथिन– हम कोनो पाटी-ताटीमे नहि रहैत छी, कोनो चुनाव-तुनाव नहि लड़ैत छी, ओकालतिओ नहि करैत छी आ ने व्यापार। तेँ हम फूसि किए बाजब ?

विद्यार्थी सन्तुष्ट भऽ हुनकासँ पढ़ऽ लागल। एकदिन पढ़ा रहल छलथिन। पछिला राति कतहु बरियातीमे गेल रहथि। तेँ जागरण भऽ गेल रहनि। पढ़बिते पढ़बिते आँखि लागि गेलनि। झुकैत देखि विद्यार्थी कहलकनि– गुरुजी, झुकै छी ?

उँघाइत लोक झुकै छी से कखनहु स्वीकार नहि कऽ सकैत अछि। एकटा कहबी छै– 'लादय पादय और उँघाय, सत्त न बाजय– जँ मरि जाय' से गुरुजी टोकला पर कहि उठलथिन– उँ हुँ। विद्यार्थी तुरन्त पोथी समटि जयबा लै ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ होइते देखि गुरुजी पुछलथिन– की भेल ? विद्यार्थी उत्तर देलकनि– अपनेकेँ उँघाइत हम अपना आँखिएँ देखलहुँ अछि। तैयो अपने पुछला पर कहलहुँ अछि– उँ हुँ। ई साफ फूसि भेल। तेँ हम आब अपने सँ नहि पढ़ब।

गुरुजी पुछलथिन– अहाँ उँघाइत देखि हमरा की कहलहुँ ?

विद्यार्थी– हम पुछलहुँ- गुरुजी, झुकै छी ?

गुरुजी-अहाँक प्रश्नक दू खण्ड छल, पहिल सम्बोधन-गुरुजी, दोसर प्रश्न झुकै छी ? दूनू खण्ड एके बेर बजलहु तेँ हमहूँ सम्बोधनक उत्तरमे कहलहुँ-उँ आ झुकै छी ? एकर उत्तर देलहुँ-हूँ। अहाँ एके बेर कहलहुँ गुरुजी झुकै छी ? हम एके संग उत्तर देलहुँ– उँ हुँ। ई फूसिकोना भेलैक ? ◆

बकरीक हसबैंड

प्रदीप दत्त आइ वर्गमे विलम्बसँ पहुँचल । तावत हाजरी भऽ गेल छलैक । शिक्षक ब्लैक बोर्ड पर गणितक कोनो प्रश्न बना कऽ विद्यार्थी सबकेँ बुझा रहल छलथिन ।

कहबी छै– 'एक बंगाली दोसर तोतराह' प्रदीप बंगाली रहबे करय ताहि पर विलम्बसँ अयबाक कारणे डेरायलो छल । गणितक ई शिक्षक कड़गर स्वभावक रहथिन, मुदा दण्डमे तेना कसिकऽ कान ऐंठैत छलथिन जे कान ओढ़ूलक फूल जकाँ लाल भऽ जाइक, संगहि कहथिन जे घड़ीमे चाभी देब बिसरि गेल छलेँ तेँ लेट भेलौ ।

प्रदीप आतंकित भेल वर्गक बाहर कनेक काल ठाढ़ रहल । शिक्षक बोर्ड पर सवाल हल कऽ जखन छात्र सभ दिस मुखातिब भेलाह तँ गेट लग ठाढ़ देखि डँटैत पुछलथिन– किए लेट भेलौ ?

प्रदीप– सकपकाइत बाजल– चललिऐ तऽ टाइमे पर मुदा बीचे बाट पर ओ बैसल छलै तेँ डर भेल ।

शिक्षक– ओ के ?

प्रदीप– सर ! दाढ़ी वाला ।

शिक्षक– दाढ़ीवाला बाबाजी ?

प्रदीप– नहि सर !

शिक्षक– मौलवी साहेब ?

प्रदीप— नहि सर !

शिक्षक— सरदार जी ?

प्रदीप— नहि सर !

शिक्षक— तखन के ?

प्रदीप— सर, दू टाङवाला नहि ।

शिक्षक— दू टाङवाला नहि तँ और के ?

प्रदीप— सर, चारि टाङ वाला ।

शिक्षक—चारि टाङ वाला ?

प्रदीप— हँऽ सर ! हमरा ओकर नाम नहि बूझल अछि । कनेक काल माथ कुड़ियबैत बाजल— सर, बोकरीक हसबैण्ड ।

सम्पूर्ण वर्गक छात्र भभाकऽ हँसि पड़ल ताहि संग शिक्षकोकेँ हँसी लागि गेलनि । कहलथिन— जो रे बोतुआ । मुदा प्रदीप घड़ीमे चाभी देअयबासँ बाँचि गेल । ◆

हमरा ठकै छी ?

पंकजकेँ वर्गसँ अनुपस्थित रहबाक जखन मास पूरि गेलैक आ फीस जमा नहि केलकै तँ नियमानुसार नाम कटि गेलैक। अगिला मास जखन स्कूल आयल तँ वर्ग शिक्षक पुछलथिन– पंकज ! ऐते दिनसँ कतऽ छलाह जे ने फीस जमा केलहक जे छुट्टीक दरखास्त देलहक। आब तँ री–एडमिशन कराबऽ पड़तह।

पंकज सफाइ दैत कहलकनि– सर ! हमर उपलाइन रहय। जोतखी बाबा उदोगक दिन तते पहिने ताकि देलखिन सेहो नाक ठेका कऽ जे धड़फड़मे दरखासो नहि देल भेल। फीस कलेक्शन दिन अबितहुँ से लोक सब कहलकै– उदोग भऽ गेला पर गामक सिमान कोना नंघतै। बाबू एकसरुआ, फटोफट्टमे पड़ल पलखतिए ने भेटलनि।

शिक्षक पुछलथिन– की छलह ?

पंकज– कहलहुँ ने हमर उपलाइन रहय।

शिक्षक– उपलाइन नहि, उपनयन, बुझलहक ?

पंकज– जी उपनैन हमरा सभक गाममे उपलाइन सैह कहै छै।

शिक्षक– उपनयन माने बुझै छहक ?

पंकज– उपनैन माने जनउ।

शिक्षक– उपनयनमे जनउ अर्थात् यज्ञोपवीत पहिराओल जाइत छैक। उपनयन माने होइत छैक विद्यार्थीकेँ शिक्षा देअयबाक हेतु गुरुक समीप लऽ जायब। जेना एखन स्कूलमे विद्यार्थीक नामांकन अर्थात् एडमिशन होइत छै।

पंकज– सर ! एडमिशनमे भोज–भात कहाँ होइ छै, उपनैनमे तँ दू दिन बड़का भोज भेलै। कुमरम दिन दालिभात, बड़–बड़ी, कते रास तीमन तरकारी

आ बलि परदान भेल रहै से माँसु परसल गेलै । पंच सब सुसुआ-सुसुआ कऽ खाइत गेलै ताइ पर दही-चिन्नी सकरौड़ी भेल रहै ।

शिक्षक— आ उपनयन दिन ?

पंकज— उपनैन दिन चूड़ा-दही-अँचार आ खाजा मुंगबा ?

शिक्षक— ई तँ भोजभात भेलौ, मड़बा पर की सब भेलौ ?

पंकज— मड़बापर आगि पजारल गेलै, पुरहित आचार्य, ब्रह्मा सबकेँ लाले-लाल धोती पहिरऽ लै देल गेलनि, कते होम-जाप भेलै मन्तर-तन्तर पढ़ल गेलै ।

शिक्षक— मन्त्र सब जे पढ़ल गेलै ताहिमे तोरा गायत्रीमंत्र सिखाओल गेलौ ने ?

पंकज— कथी गाइत्री ?

शिक्षक— आचार्य के रहथुन ?

पंकज— बाबा ।

शिक्षक— बाबा कानमे किछु कहलथुन ने ?

पंकज— हँऽ धोतीसँ मूड़ी झाँपिकऽ किदन-किदन कहलनि ।

शिक्षक— किदन-किदन कहलथुन कि गायत्री मंत्र ?

पंकज— सर, असलमे हमरा बाबा केर सब दाँत टूटल छनि मन्तर जे कहथिन से हमरा कानमे फुस-फुस हवा लागय, मन्तर नहि बुझलिऐ, खाली कानमे गुदगुदी लागल ।

शिक्षक— तखन तँ भोजे भात भेलौ, असल भेवे ने कयलौ । भोजो भात गौआँटाकेँ खोऔलही, संगी-साथी आ हमरा तँ भोजो नहि खोऔलेँ कमसँ कम खाजा मुङबो तँ लेने अबितेँ ।

पंकज— सर, नानी, मामी, पीसी, मौसी, बहिन सब आयल रहथिन आ हुनकासभक संग ढेरी ढेनमा-ढेनमी रहनि आ ओ सब भरि दिन खाजे-मुङबा लऽकऽ भकोसइ छलै सब खतम कऽ देलकै ।

शिक्षक— अच्छा, जे भेलौ से भेलौ, गायत्री तँ आबो सीखि ले ।

पंकज— की होइ छै गाइत्री ?

शिक्षक— ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं....

पंकज— हइ, सर, अहाँ ठकै छी ? ई तँ कैसेटमे बजै छै, ई कोना हेतै गाइत्री ? ◆

तामस

हुनका तामस छलनि सबसँ पहिने अपना पर तकर बाद टोलबैया पर तकर बाद सम्पूर्ण गौआँपर ।

अहाँक मनमे प्रश्न उठल होयत जे कथीक तामस छलनि तँ से कारण कहि दैत छी । बात कने पुरान छैक । मात्र-50-60 वर्ष पहिलुक गप्प थिकै । समाजमे जे अपन प्रतिष्ठा बढ़बऽ चाहैत छल, धनिक होयबाक अहंकेँ पुष्ट करऽ चाहैत छल से कोनो विशेष काज करतेवतामे जयबारी भोज करैत छल । दू गाम, चारि गामकेँ नौत दैत छलै, बिझओ ताल्लुक रहैत छलै । आइ एक गामकेँ तँ परसू दोसर गामकेँ, एहिना बीचमे एक दू दिनक अन्तराल पर बिझओ करा भोज खोआ देल करैक ।

एहि अवधिमे भोजमे की की सामग्री परसल जाइत छैक से दोसर-तेसर गामक लोक पता लगा लैत छल आ तदनुसार किछु खौकार, खाधुर लोक तैयार भऽकऽ नोंत खाय लै जाय । अक्षय झा जनिका लोक अच्छे बाबू कहनि दही आ मुंगबाक प्रेमी छलाह । सुनलथिन जे केहुनियाँ खाजा आ अधसेरा मुंगबा तँ छैके संगहि दही तेहन जे देवालपर फेकि दिऔ तँ गहूमक सानल चिक्कस जकाँ सटले रहि जायत ।

भोज खाय लै जयबाक रहैक बस दू कोस मात्र । बिझओक दिन गौआँ टोलबैयाक संगोर भेलै आधपहर दिन अछैत लोक विदा भेल । आन दिन अच्छे बाबू घोरि कऽ दैत छलथिन आइ गोली संग लऽ लेलनि । धीयापूता सब लै दूटा बैलगाड़ी जोतल गेलै । दूनू टोलसँ चारिटा खबास सभक लोटा एक बोरामे दऽ गाड़ी पर रखलक । धीया-पूताकेँ गाड़ी पर लदलक । मुनहारि साँझमे नोथारी

लोकनि ओहि गाम पहुँचलाह । गामक बाहर एक पोखरिक भीड़ पर मन्दिर, इनार, फुलबाड़ी । ओतहि लोटा लऽकऽ सब नाद शुद्ध करबा लै बाध दिस गेलाह । अच्छे बाबू इनारसँ पानि भरि गोलीकेँ घोंटि तमाकू चुना ठोर तर दऽ देलाक बाद गेलाह । देरी लागि गेलनि । हाथ मटिअबिते रहथि कि सबकेँ बजाबऽ लै घरबैयाक आदमी पहुँचि गेलै, अच्छे बाबू पछुआ गेलाह । तावत आङन भरि गेल रहैक । हारिकऽ तुलसी चौरा लग कोनमे कने जगह बनौलनि। पड़ि गेलाह एकाढ़मे ।

एतहिसँ तामस चढ़ब शुरू भेलनि । पानि पात, भोजनक सामग्री परसाइत-परसाइत गोली अपन प्रभाव देखाबऽ लगलनि । एक कात पड़िए गेल छलाह । बारिक जे किछु दैत गेलनि सब साफ कयने गेलाह । दही दऽ जेहने सुनने रहथिन, तरहत्थी सन मोटगर छाल्ही तकरा काछि काछि कात कऽ रखने जाथि । से ई सोचि कऽ जे सब सँ अन्तमे खायब । मुदा मुंगबाक परसन गनले गूथल लोक लेलक, ताहिमे एक अच्छे बाबू सेहो छलाह । ओ सधबैत सधबैत अगन्न भऽ गेलाह । ई तँ एक कोनमे बैसल रहथि, सभक नजरि हिनका पर रहैक नहि, हिनक इच्छा रहनि जे लोक दम धऽकऽ भोजन करय तँ दस-पाँच मिनटमे पानि दऽ कऽ मुंगबाकेँ पेटमे पसारि, छाल्ही लै जगह बनि जायत ।

मुदा से भेलनि नहि, लोक उठि गेल, क्यौ ई हो पुछारि नहि कयलकै जे सबकेँ भोजन सम्पन्न भऽ गेल कि नाहे ? एहि हूलिमालिमे अच्छे बाबूकेँ काछि-काछि कऽकात राखल छाल्ही छोड़िकऽ उठि जाय पड़लनि ।

अपना पर तामस एहि द्वारेँ भेलनि जे छाल्ही खाइए लितहुँ, रखने गेलहुँ से बुड़ित्व किएक कयलहुँ ?

टोलबैया पर तामस एहि द्वारेँ भेलनि जे अच्छे बाबू कोनो ढोंढ़ाइ-मङनू तँ नहि छलाह, मुख-पात लोक रहथि, तखन हिनका लेल एकटा आसन आरक्षित किएक नहि रखलकनि ?

गौआँ सब पर तामस होएबाक कारण भेलनि जे हँसेरी जकाँ सब बिनु पुछारि कयने उठि किएक गेल ?

एही दुःखेँ अच्छे बाबू छओ मास धरि सबसँ बाजब-भूकब बन्द कयने रहलाह । ◆

पुरना सवारी

ठाकुर साहेबक बालकक विवाह स्थिर भऽ गेलनि, बालक मेडिकलक विद्यार्थी छथिन । पुश्तैनी जमीन्दारी तँ कहिया ने चल गेलनि मुदा कहबी छै 'टुटलो हथियार तैयो नओ घरक साङह । कतबो टूटि गेलाह अछि, टब्बर पुरने छनि । जौड़ ने जरि जाइत छैक, ओकर ऐंठन तँ ओहिना रहैत छैक । से ठाकुरो साहेब निमाहि रहलाह अछि । अपने जीवनमे जे अरजलनि से अरजबे कयलनि, बापो-पितामहक अरजल पर्याप्त रहनि । बेटाक विवाह अपन खानदानमे जेना होइत रहलनि अछि ताहिसँ न्यून नहि कऽ सकैत छथि । अपना विवाहमे हाथी, घोड़ा, पालकी गेल रहनि, से तँ होयबेक टा चाही ।

दोस्त-महिम, लगुआ-भगुआ सब कहऽ लगलनि आब हाथी-घोड़ाक युग गेलै । आब कार, स्कूटर, मोटर साइकिल, बस, मेक्सी ई सब सवारी चलै छै । ठाकुर साहेब कहलथिन- सेहो रहय, मुदा एकोटा हाथी आ पाँचो टा घोड़ा आ वर लै पालकी तँ चाहबे करी । फेर लोक कहलकनि- हाथी घोड़ा तँ किराया पर भेटियो जायत, पालकी कहासँ आनब । आब कहार भेटिते ने छै । ओकरा उठाओत के ?

ओम्हर मेडिकलमे पढ़ैत बेटा सेहो पालकी केँ बाबा आदमक जमानाक सवारी कहि, ओहि पर चढ़ब अस्वीकार कऽ देलकनि । अन्तत: पालकी खारिज भऽ गेल, मुदा हाथी आ दुइओटा घोड़ा बरियातीमे नहि रहब ठाकुर साहेब अपन शान ओ गुमानक खिलाफ बुझैत ओहि पर अड़ले रहलाह । नव जे किछु हो ताहिसँ परहेज नहि, मुदा ठाकुर राणा रणविजय प्रताप नारायण सिंहक खानदानमे जे व्यवहार रहलनि अछि तकरा एकदम छोड़ि देब अनर्गल माननिहार ठाकुर साहेब मोछकेँ पिजबैत कहलथिन- तों आर नवतुरिया बस नकल करेमे माहिर, खानदान के जे इज्जत समाजमे बनल हय से न न बुझबहू ।

ई कुटमैती तँ गामसँ दसे किलो मीटर दूर पर भेल रहनि मुदा एखनहुँ घोड़ा दू टा जाहि कुटुम्बकेँ छनि सब तीस कीलोमीटर पर रहथिन । हुनका दुनूकेँ घोड़ा सहित बरियातीमे अयबा लै निमंत्रण पत्र पठौलथिन आ एक गोटे एहने एहने अवसरपर भाड़ा पर पठयबा लै हाथी पोसने छल ओ दू दिन लै दू हजार पर तैयार भेलनि । पालकी नहिओ भेलनि तँ तकर अभिखेद ठाकुर साहेबकेँ नहि रहलनि जखन विवाहक दिनमे दुलहिनोसँ बेसी साज सिङार कयल मारूतिकार दलान पर आबि गेलनि ।

बाजा-गाजामे आधुनिक बैण्डपार्टी तँ रहबे करनि ताहि संग धुथहू-सिंगा सेहो रहनि । जे अबथिन ठाकुर साहेब उत्साहसँ सबकेँ कहथिन जे हम लयका (नवका) के साथे पुरनको के जोड़ के बारात सजौलीयऽ ।

अपन साढ़ू आ बेटी पक्षक समधि अपन घोड़ा पर चढ़ले एलथिन । चलबाक काल बेटाक मेडिकलिया संगी सब कार सब पर आ साढ़ू विचार देलथिन जे– लड़िका के नाना आ समधी सबसे बुजुर्ग छथ तइसे ई दुनू गोड़ा हाथी पर चलथ आ हम दुनू साढ़ू घोड़ा पर । बाकी एक गो टरेक्टर सेहो साथ लें लीं जे एन्ने से देवानजी आ लड़िका बच्चा सब चढ़ के चलत, ओन्ने से घुरतीमे दहेजमे जे सामान मिलत से जेतना जे अइमे अँट सकत से लाद लेब।

बरियाती सजिधजि कऽ साजबाजक संग विदा भेल । पछिला बाढ़िमे एक ठाम सड़क तेना टूटल रहै जे सड़कसँ तीन मर्द नीचाँ कटारिमे भऽ गेल रहैक । रच्छ रहैक जे कटारिमे पानि नहि रहैक । तथापि ओहि उचाइ पर चढ़यबामे कनेक खतरो रहैक तँ कारपर चढ़ल सवारी सबकेँ उतारि उतारि कार सब कटारि पार कयलक । ठाकुर साहेबक दुनू साढ़ूक घोड़ा सड़ाक दऽ उपर चल गेलनि । ठाकुर साहेब गौरवसँ चारू कात तकैत बाजि उठलाह– आखिर ई अपना देशके पुराना सवारी हयऽ । आब हाथी कटारि पार करऽ लागल । नीचाँ उतरऽ काल समधी आ नानाजी आगू मुहेँ झुकि गेलाह, मुदा हाथी जखन उपर चढ़ऽ लगलै कि धुथहू वालाकेँ कां फुरलै की ने, ओ धूथहू ततेक जोरसँ फूकि देलकै जे नानाजी चौंकि उठलाह, हाथसँ डोरी छूटि गेलनि हाथी पर सँ ओंघड़ा कऽ तेना खसलाह जे वामा हाथक केहुनी आ पैरक घुट्टी दू टुकरी भऽ गेलनि। कोनो नवतुरिया बाजि उठल– ई अपना देशके पुराना सवारी हय नऽ । रंगमे भंग भऽ गेल । ठाकुर साहेब ओहि छौड़ा पर तामसेँ मन मसोसि कऽ रहि गेलाह । ◆

अहाँके

युगल रायकेँ पेटमे प्राणान्तिक दर्द भऽ रहल छलनि । काल्हिए ममियौतक बेटाक उपनयन सम्पन्न करा गाम घूरल छलाह । एही काजमे सहयोग करबाक हेतु ममियौत मास दिन पहिने चिट्ठी लिखने छलथिन ।

कतेक देवेँ सेवेँ तीन बेटीपर ई बेटा भेल छलनि ममियौतकेँ । माय झुरझुराइते रहैत छलथिन । हुनके दुराग्रह पर गर्भाष्टमे मे उपनयन ठानि देने छलथिन । सबसँ भारी छलनि छागरबलि । कुलदेवताकेँ एक बरुआ पर छओ टा छागर बलि पड़ैत छनि, तकर अलावे एकटा ग्राम देवताकेँ ।

जहिया पूर्वज लोकनि एतेक छागरक बलि देब ठनने छल होइथिन तहिया टका-टुकुरमे छागर भेटैत छल होयतैक बल्कि ताहूसँ कममे । आब तँ छागरेमे हजार-बजार लागि जाइत छै । ताहि परसँ एकरा सबकेँ काटब, बनायब आ रान्हब सब कठिन काज लगैत छै ।

युगल 16-17 वर्षक वयसमे दरिद्रताक मारल रहलाक कारणेँ कलकत्ता चल गेल छलाह । पहिने कोनो होटलमे पानि भरबाक, मसाला पिसबाक, तरकारी काटबाक काज पर भोजन कपड़ा आ 10/- टाका मासिक वेतन पर नौकरी भेटि गेलनि । ब्राह्मण रहलाक कारणेँ ऐंठ-काँट उठयबा धोबाक काज नहि गछलथिन । दरिद्र आ निरक्षर रहितो संस्कारी कुलमे जन्म भेलाक कारणेँ बुद्धिसँ तेजगर रहबे करथि भरि पेट अन्न भेटलाक कारणेँ बरख लगैत लगैत देह दशा फूटि कऽ जवान भऽ गेलनि ।

होटल रहैक एक सरदारजीक जे खासकऽ मांस खेनिहार लोकक लेल प्रसिद्ध छलै । सरदारजीक चारिटा ट्रक सेहो चलैत छलै । अपने ओ अधिक

काल बाहरे रहैत छल । होटलक संचालन सरदारनीएक देख-रेखमे होइक । युगल पनि भरैत मसल्ला पिसैत धीरे-धीरे पाक शास्त्रमे पारंगत होइत गेलाह । सरदारनीक कृपा पात्र होयबामे सेहो बेसी समय नहि लगलनि । एक दिन एहन अयलनि जे मांस रन्हबाक विशेषज्ञ बनि गेलाह आ मुख्य बाबर्चीक पदपर प्रोन्नति भेटि गेलनि, तदनुरूप वेतन ओ आन-आन सुविधामे सेहो बढ़ोत्तरी भऽ गेलनि । ग्राहकक संख्या बढ़ऽ लगलैक, संगहि हिनक ख्यातिओ बढ़ऽलग लगलनि । आब अनेक होटल वाला ओहूसँ अधिक वेतन दऽ हिनका ऑफर पर ऑफर देबऽ लगलनि । सरदारनी एक तँ होटलक चलतीकेँ देखय, दोसर आत्मसुख सेहो भेटैक, तेँ आन जतेक वेतन देबऽ चाहनि ताहिसँ 25-50 टाका बेसीए बढ़ा देल करनि ।

पाँच वर्ष बीतैत-बीतैत युगल सुभ्यस्त होअऽ लगलाह । बरखमा दिनपर एक मासलै गाम आबथि । गाममे 2-4 कट्ठा-जमीन जे उखड़े से कीनऽ लगलाह । परिवारमे आदर आ समाजमे धाख तँ कमौए पूतकेँ होइत छैक, से गाममे क्यो कहबऽ लगलाह । पहिने कतहु सर-सम्बन्धीमे जाथि तँ पैरो धोयबाक आग्रह नहि होइनि । आव लोटा भरि पानिक संग कम्बल आ खराम पर्यन्त आवि जाइत छनि । मांस रन्हबामे विशेषज्ञता प्राप्त रहलेक कारणेँ ममियौत अयबा लै आग्रह पर आग्रह करैत तीनटा चिट्ठी पठा चुकल छलथिन । सात गोट छागरक एक अढ़ैया करेजिए भऽ गेल छलैक । युगल छोट-छोट घानी बना करेजी भुजने जाथि आ बीच-बीचमे दू चारि खण्ड लपालप मुँहमे सेहो फेकने जाथि । क्यो मुँह चलबैत धोपचटमे देखि ने लेअय तेँ अधचिबओले गटागट घोँटने जाथि ।

वास्तवमे मांस एहन स्वादिष्ट बनलैक जेहन गौआँ सब जीवनमे कहियो ने खयने रहनि । भोजमे युगलक जयजयकार भऽ गेलनि । प्रशंसाक पथार लागि गेलनि । प्रशंसा सुनिसुनि जहिना छाती फूलैत गेलनि तहिना अधचिबाओल करेजी पेट फुलौने जाइनि । ताहि पर एतेक दूरसँ आबि, एतेक मेहनति कऽ मांस रन्हने छलाह तेँ विदाइमे धोती अवश्य भेटबाक चाहियनि से सोचि ममियौत ब्रह्माक भारा सेहो दऽ देलथिन । ताहिसँ पहिने अन्न कोना खयताह, तेँ दूध केरा फलाहार कयलनि । फूलल पेट आरो तड़ङि गेलनि ।

दोसर दिन अन्हरोखे गाम विदा भेलाह । बाटेसँ दस्त आरम्भ भेलनि । करेजी आँतकेँ बकुटि लेने रहनि से दर्द सँ छटपटाइत छलाह । गाम अबैत अबैत लारू बातू भऽ गेलाह । गाम पर कते झाड़-फूक, टोना-टापर औषधि

बाड़ी भेलनि । कोनो सुनवाहि नहि, हँऽ शुलवाहि शुरू भऽ गेल रहनि । कनेमने शोणित मलक संग आबऽ लागल रहनि । अन्ततः उठा-पुठा कऽ दरभंगा डाक्टरक ओतऽ आनल गेलाह ।

युगलकेँ एकटा सकुनतकिया छनि जे सब वाक्यमे जोड़ैत छथिन । डाक्टर पुछलथिन– की होइत अछि ?

युगल कहलथिन– अहाँकेँ प्रान टा नहि बहराइत अछि बाँकी अहाँकेँ सब किछु होइत अछि ।

डा०– कोना आ कहियासँ ई दर्द होइत अछि ?

युगल– बस अहाँकेँ परसू कने अन्दाजसँ बेसी करेजी खयना गेल आ ताहीसँ अहाँकेँ पेट फ़ुलऽ लागल ताहिपरसँ अहाँकेँ उपनयनमे ब्रह्मा बना देल गेल तँ अहाँकेँ जाधरि से काज भऽ नहि जाइत अछि ता धरि अहाँकेँ अन्न कोना देल जाइत ? तँ अहाँकेँ आग्रह पूर्वक सेहो पुष्ट कऽ दूध केरा फलाहार करा देल गेल ।

डा०– तखन ?

युगल- तखन अहाँकेँ पेट पहिनेसँ फुलले छल ताहिपर सँ अहाँकेँ पेट तनने गेल । तकर बाद अहाँकेँ वेग पर वेग आबऽ लागल । पहिने तँ अहाँकेँ थोड़ेक मल बहरायल आ बादमे अहाँकेँ अगबे हवा आ पानि फुचुक्का जकाँ छूट लागल । की कहू डाक्टर साहेब तकर बाद अहाँकेँ ताहि संग कनेके कऽ खून सेहो आबऽ लागल ।

डा०–एखन की भऽ रहल अछि ?

युगल– एखन डाक्टर साहेब अहाँकेँ जेना पेटमे बरछी भोकि रहल हो। अहाँकेँ सुनैत सुनैत डाक्टर साहेबक मन तुरूछि गेल छलनि । तुरूछले स्वरमे कहलथिन– हमरा ने वर्छी भोकैत अछि ने खून खसैत अछि आ ने फुचुक्का चलैत अछि । ई सब कर्म अहाँकेँ भेत अछि, हमरा नहि । ◆

दीर्घ ईकारान्त

गामक लोअर प्राइमरी स्कूल । स्कूलमे तीन टा क्लास आ तीनटा कोठली । हाजरीबहीमे हस्ताक्षर कयनिहार आ दरमाहा उठौनिहार तीनटा मास्टर । मुदा स्कूल पर उपस्थित रहनिहार बेराबेरी दू गोटसँ बेसी कोनो दिन नहि । कहिओ कऽ एकसरो । भेंडीक चरवाह जकाँ तीनू क्लासक विद्यार्थीकेँ कोनहुना ढठने स्कूल चलाबथि । एक क्लासमे जाकऽ किछु पाठ दऽ दोसर क्लास जाथि तावत तेसरमे छौंड़ा सब हल्ला करय । जावत तेसरमे जाथि तावत बाँकीमे अपनामे गारा-गारी, मारा-मारी करैत रहय ।

एक दिन एक घटना घटल । मास्टर साहेब पहिलवर्गमे अ, आ सँ क्ष, त्र, ज्ञ धरि सब विद्यार्थीकेँ पाटीपर लिखिकऽ राखऽ कहि दोसर वर्गमे गेलाह, तावत तेसर वर्गक दू टा छात्र एक दोसरसँ पटकम-पटका कऽ रहल छल आ बाँकी छात्र होहकारी दऽ रहल छलैक ।

मास्टर साहेब कोलाहल सुनि दोसर वर्गमे ब्लैक बोर्ड पर चारिटा जोड़क सवाल लिखि पाँचम सवाल आधा लिखल छोड़ि दौड़लाह तेसर वर्ग दिस । देखैत छथि एक दोसराक चुरकी पकड़ि घीचातीरी कऽ रहल अछि । मास्टर साहेबकेँ देखि एक दोसरकेँ छोड़ि मुँह बिधुऔने ठाढ़ रहल ।

गुरुजी पुछलथिन– तोँ दुनू किएक झगड़ा करैत छलेँ ?

एक बाजल– ई हमरा गारि पढ़लक अछि ।

गुरुजी– कोन गारि ?

छौंड़ा– बहुत निर्घिन गारि ।

गुरुजी– कोन निर्घिन गारि ?

छौंड़ा– ई कहलक जे तोहर बाप स्त्रीलिंग छौ ।

गुरुजी– (दोसर छात्रसँ) की रे ! तोँ से किएक कहलही ?

छात्र– सर ! दीर्घ ईकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होइछै आ एकरा बापक नाम थिकै– फगुनी सहनी तँ स्त्रीलिंग भेलै की नहि ?

तेसर– हम कहैत रहि गेलिऐ जे तखन तँ गुरुजी सेहो स्त्रीलिंग छथिन । से ई दूनू नहि मानलक आ नाननारी करऽ लागल । ◆

'हमहू तहियबितहु'

कोनो आवश्यके काजसँ देवानजी भिनसरे गाम गेल छलाह । पड़ोसिया एक गौर पोसने छथिन, ओ गौर नव जवानी पाबि उत्फाल भेल रहैत छनि, से काल्हिओ पानि पियाबऽ लै फोलिकऽ पोखरि लऽ जाइत काल हाथसँ डोरी छूटि गेलनि आ सौंसे टोल पर मकऽ लगलनि । देवानजीक घर लग बाट संकीर्ण छैक । ओही दोगठीमे घेड़ि कऽ पकड़ऽ चाहलथिन तँ गौर देवानजीक आङनक ड्योढ़ी टाट तोड़ैत आङन पैसि गेलनि । आङनमे मसुरीक पथार छलैक से ठाढ़ भऽ खाय लगलै, ताही काल पकड़मे आबि गेलनि ।

गौर तँ पकड़ा गेलनि मुदा पहिल अपराध ई भऽ गेलैक जे ड्योढ़ी परक टाट टूटि गेलासँ आङन उदाम भऽ गेलनि आ दोसर अपराध ई जे आङनमे मसुरी जे पथार पर रहैक से बारह पसेरी । गौर तँ दू-चारि कओर खयलकै, मुदा गाय द्वारा ऐंठाओल अन्न अशुद्ध भऽ जाइत छैक । ओ फेर घरमे किएक राखल जाय । देवानजीक पत्नी कहलथिन जे हमर जे विद्दति कयलक अछि से के भरत ? एहि पर दुनू गोटेमे त्वंचाहंच भऽ गेलनि । सैह समाद गामसँ आयल छलनि ।

एहि बीच जनिक ई देवानजी छलथिन तनिक छोट बालकक जन्मदिन छलनि तेँ जमीन्दार साहेबक जेठ बालक निमंत्रण देवऽ अयलथिन । देवानजीक दस -एगारह वर्षक बालक भेटलथिन तँ पिता दऽ पुछलथिन -बाबू कतऽ छथि ?

बालक- गाम गेल छथिन, आइए चल औथिन । निमंत्रण देनिहार कहलथिन- आइ बुचनूक बर्थ डे थिकनि तेँ बाबू आबथि तँ कहि देवनि जे साँझमे ड्यौढ़ीपर नोत छनि आ अहूँ चल आयब ।

नेना आदमी ड्योढ़ी परक नोंत पूरी मिठाइक कचरम कूट होयतैक, पिता जँ कदाचित नहि अयलथिन तँ एकसर कोना जायत, जँ चलो गेल तँ परसनिहार एकरा दिस ध्यान देतैक अथवा नहि देतैक। एहि चिन्तामे पड़ल ओ नेना पाँच मिनट, दस मिनट पर पिताक अयबाक बाट दिस ताकय। मनमे एक प्रकारक अहलदिली पैसल रहैक। जहिना-जहिना सूर्य अस्ताचल दिस बढ़ल जाथिन, तहिना-तहिना एकर अहलदिली सेहो बढ़ल जाइक। जखन सूर्य लुक-झुक करऽ लगलथिन तँ दूर पर पिताकेँ अबैत देखि खुशीसँ कूदऽ लागल। जल्दीसँ पिताकेँ नोतक समाद कहबा लै दौड़िकऽ आगाँ गेल। हकमैत बापकेँ पुछलक– बाबू औ, ई व्यर्थ डे की होइ छै ?

“व्यर्थ डे ? से की ?

“बड़का बच्चा आयल छलखिन ऊहे कहि गेलखुन जे आबथि तऽ कहि देबनि बुचनूक व्यर्थ डे छिऐन तेँ साँझमे नोंत।

देवानजी- व्यर्थ डे नहि, वर्थ डे, माने जन्मदिन।

पुत्र – बुचनू बाबू तऽ ओतेक गो के छथिन, तखैन आइ जनम दिन केना भेलैन ?

देवान- आइ जे तिथि थिकै, जहिया जन्म भेल रहनि तहिओ यैह तिथि रहैक तेँ आइ जन्म दिन।

पुत्र- बाबू औ, तिथि की होइछै ?

देवान- जेना अङरेजी तारिख होइछै तहिना अपना सबकेँ पतड़ामे तिथि लिखल रहै छै। ई गप्प सप्प करैत दुनू बापुत डेरा पर जाधरि पहुँचलाह तावत सूर्य डूबि गेल छलथिन।

बेटा कहलकनि -बाबू, हम झाड़ा फिरने अबैछी। पेट खाली रहत तखैन ने भोज मे डटि कऽ खायल हैत। अहूँ मैदान जैब तऽ झटसिन भऽ आउ। अस्तु।

देवानजी सोचमे पड़ि गेलाह जे जन्म दिनक अवसर पर बिना किछु उपहार लेने कोना गेल जाय। एहि देहातमे बाजारो नहि, झिल्ली मुरही, कचरी घुघनी छोड़ि आर की भेंटत। अन्तमे फुरलनि जे बड़का बड़का लोक विशिष्ट विशिष्ट उपहार लऽकऽ अबैत जयथिन। हम आशीर्वादीमे चारि पाँती किछु

लिखि ली सैह उत्तम । लाल मोसि आ चिक्कन कागत लऽ बैसलाह, मुदा किछु फुरिते ने छलनि । एमहर बेटा अगुतबैत रहनि आ देवानजी माथ कूड़ियबैत सोचैत रहथि । अन्तमे चारि पाँती फुरौलनि -

"बुचनू बाबू युग-युग जीवथु
मिसरी मिला दूध नित पीबथु
जिनगी सदा रहनु आवाद
लेथु सभक शुभ आशीर्वाद"

रचि-रचि कऽ सुन्दर अक्षरमे लिखलनि आ प्रफुल्लित भऽ दुनू बापुत विदा भेलाह । ड्योढ़ी पर पहुँचलाह तँ 20-25 गोटे दरबारमे उपस्थित रहथिन । बूढ़ा जमीन्दार आराम कुर्सी पर उतान पड़ल छलाह । जेठ बालक भोज -भातक ओरिआनमे व्यस्त छलथिन । बुचनू लाल धोती, रेशमी कुर्त्ता पहिरने चानन-काजर करौने, धोतीक कोंचाकेँ बामा हाथेँ पकड़ने आङनसँ बहरयलाह आ बापक आराम कुर्सीक कातमे राखल कुर्सी पर आवि बैसि गेलाह । आगत आमन्त्रित लोक सब उपहार देबऽ लगलथिन । सबसँ अन्तमे देवानजी उठलाह आ कल जोड़ि बजलाह- सरकार, हम सरकारक अकिंचन सेवक, मूल्यवान उपहार कतऽ सँ अनितहुँ, तखन मनक उद्गार चारि पाँतीमे लिखि कऽ अनने छी । आज्ञा हो तँ से पढ़ि सुना दी ।

सभक कान ठाढ़ भऽ गेलैक । बूढ़ा जमींदार साहेब बाजि उठलाह - अरे एहिमे आज्ञाक की दरकार । सब समर्थन कयलथिन- जी सरकार ! देवानजी अपन उदगारक चारू पाँती रेघा-रेघा कऽ दोहरा दोहरा कऽ सस्वर गाबि गेलाह । दरबार मे जय-जयकार भऽ गेलनि । देवानजीक बेटा बेस प्रफुल्लित भऽ गेलनि ।

भोजनक आसन लागि गेलैक । हाथ मुँह धो-धो सब बैसलाह । सामग्री परसल जाय लगलैक । कचौड़ी, रंग-बिरंगक तरकारी रंग-बिरंगक मधूरक पथार लागि गेलैक । देवानजीक बटुकबा चारि कओर खाय दू घोंट पानि पीबय । दू-तीन बेर एना पानि पिबैत देखि देवानजी वामे हाथेँ एक लप्पड़ कनगोज तका मारैत कहलथिन - अभागल नहितन, पानिए ढकोसि लेबऽ तऽ मधूर सब कोन पेटमे खयबह ? बटुकबा किछु नहि बाजल । चोट बेसी जोरसँ लागि गेल छलैक से आखिसँ ढबढब नीर खसि पड़लैक मुदा कनितो रहल आ खाइतो रहल ।

असलमे दिनमे पिताकेँ नहि रहलाक कारणेँ भानस भेल नहि छलैक । चूड़ागूड़ फाँकि पानि पीबि लेने छल । नोंतक नाम सुनि दोहराकऽ सेहो नहि किछु खयलक । कचौड़ीक कोन गिनती एक टा खाजा दू-दू टा कऽ लड्डू, बालुसाही, अमिर्ती, पनितोआ जे पहिल खेप परसल गेल छलैक से तँ सठयबे कयलक, परसन देबऽ जतेक बेर अयलैक, एको टामे नहि नहि कहलकै । भोजन भऽ गेलाक बाद हाथ धोइत काल बापकेँ कहलक - बाबू, अहाँ बेकारे ने हमरा मारलहुँ, हम तऽ पानि दऽ कऽ पेटमे तहियबैत रहियै, पातपर कुच्छो छोड़लिऐ ?

बाप फेर दोसर कनगोज तका दोसर लप्पड़ मारैत कहलथिन - से खयबे काल हमरो किए ने कहलेँ ? हमहूँ तहियबितहुँ । ◆

मुट्ठी आ चुटकी

देबू बी०ए० पास कऽ गामक नामकेँ उजागर कयलनि। ई ताहि दिनुक बात थिकै जहिया ककरो कोनो पत्र-पत्रिकामे कोनो रचना छपैक तँ नामक आगाँ बी०ए०आदि टाइटिल गौरव पूर्वक लिखल करय। जहिना पहिने टेलीफोन तेहने धनाढ्य, बाबू-बबुआन, हाकिम-हुकुमकेँ रहल करनि तहिना देशक गोट-पगरा लिखल-पढ़ल गाममे बी०ए० पास लोक भेल करैक।

से देबू जखन बी०ए०पास कयलनि तँ लोककेँ गौरवो होइ आ आश्चर्य सेहो। आश्चर्य एहि लेल जे देबूक पिताक आस्था-पात तेहन नहि रहनि आ ने अपने लिखल पढ़ल रहथिन, साक्षर मात्र रहथिन। एहन रहितो बेटाकेँ अङरेजी पढ़यबाक हिम्मति कयलनि सेहो बी०ए० धरि। साधारणतः लोक संस्कृत पढ़य, जतऽ फीस नहि लगैत छैक। फीस तँ छोड़ू, भोजनो अनेक महंथ सभक स्थान पर पढ़बाक लेल देल जाइक।

आब जहिना टेलीफोनसँ टेली शब्दो उड़िगेल खाली फोन सेहो मोवाइल आ ताहू पर बनबहेड़, जकरा- तकरा, लुच्चा -लफंगा, चोर-उचक्का, रंगदार डकैत पर्यन्तक लग भऽ गेलैक अछि तहिना बी०ए०पास बेरोजगार बौआइत ढहनाइत इंटरव्यूमे धक्का खाइत असंख्य भेटत, मुदा तहिया बी०ए०क एक मर्यादा छलै, समाजमे प्रतिष्ठा छलै। से पद देबू पाबि लेलनि से कनीटा बात भेलै?

परोपट्टामे हाइस्कूल नहि छलै। संयोगवश बड़ा गामसँ पन्द्रहे कोसपर एक नव हाइस्कूलक स्थापना भेलै। देबू ताहिमे फाउण्डर टीचर माने संस्थापक शिक्षक भऽ गेलाह। छोटसन देहाती बाजार छलै, स्कूलक स्थापनासँ रौनक आबि गेलै। समाजेक सहयोगसँ भवन, छात्रावास, शिक्षक सबकेँ रहबा लै छोट छोट घर सब बनलै। लोकक अवरजात बढ़लै। देबू एहि निर्माण काजमे मनोयोगसँ परश्रिम कयलनि तेँ कने बेसी लोक चिन्हार भऽ गेलनि। गोटेक वर्ष बीतैत-बीतैत स्कूलक जड़ि जमि गेलै। ततवा विद्यार्थी भऽ गेलै जे दसो शिक्षक, किरानी, चपरासी सबकेँ किछु-किछु मासिक वेतन, सबसँ अधिक 50 कमसँ कम 10 रुपैया सबकेँ भेटऽ लगलै।

देबू जीवनकेँ अनमोल मानथि । समयक नीक उपयोग करबाक चाही जाहिसँ अपनो जीवनक स्थिर आधार हो आ समाजोक किछु सेवा भऽ जाइक । से सोचि देबू स्कूलेपर डेरा लेलनि । गामसँ डेरा सम्हारबा लेल मायकेँ सेहो लऽ अनलनि ।

एहिसँ पहिने घर-आश्रम, भोजन-भात आदि मे जे खर्च होइनि से बनियाँक उधार आ परिजनक पैंचसँ मास लगला पर जे जहाँ धरि बनि पवनि से सधा देथिन आ जे नहि सधनि तकरा अगिला मासक भरोसेँ छोड़ि देथि ।

मायकेँ गामसँ अयला बरख पुरऽ लगलनि तँ बारहम मासमे माय कहलथिन- देबू । एहि मासलै किछु किनबाक काज नहि ।

आश्रमक चाउर-दालि, तेल-मसाला सब किछु मास भरि चलि जायत आ अगिला माससँ उधारी पुधारी लेबासँ छुट्टी भेटि जयतह । देबू आश्चर्य चकित होइत पुछलथिन- ई कोना बँचा लेलही जे मास भरि निश्चिन्त ?

माय कहलथिन- मुट्ठी चुटकी सँ ।

मुट्ठी चुटकी !! मानें ?

माय बुझबऽ लगलथिन– चाउर सिदहामे सँ एक मुट्ठी बाहर कऽ लेलासँ भोजनमे घटैत नहि छैक । चुटकी भरि नोन सब दिन फराक राखि लेला पर ओतबाक वचत एक मास लेल पूरा भऽ जाइ छै । आगाँ कहलथिन - देबू, ! तोँ सब काल्हि जन्म लेलह अछि, कोना बूझल रहतह । महात्मा गान्धी जी एहि मुठियाक बलेँ काँग्रेस सन संस्था ठाढ़ कयने रहथि । आइसँ सप्पत खा लैह जे पेट चलयबाक हेतु पैंच-उधार नहि करब । पैंच-उधारक लुतुक लागि गेला पर जीह नमरि जाइ छै, मन बहसि जाइ छै ।

मायक कहल बात देबू केँ चकित कऽ देलकनि । मनमे भेलनि जे माय निरक्षर अछि तथापि ओ अनुभव आ विवेक सँ जीवाक कला जनैत अछि । यदि शिक्षा भेल रहितैक तखन..........?

वर्त्तमान पर ध्यान गेलनि, आजुक स्थिति पर सोचऽ लगलाह - स्त्री शिक्षा बढ़लैक अछि । गाम पंचायतसँ लऽ संसद धरि, विधायिका सँ प्रशासनिक क्षेत्र धरि नीक-नीक उच्च पद पर महिला लोकनि छथि तथापि एहि भोगवादी विहाड़िमे ककरो ह्रदयमे विवेकक दीप कहाँ जरै छनि । आ भोगवाद सौंसे समाजकेँ चिबा रहल छैक । ◆

एक टाकाक मोल

बात थिकै ताहि दिनक जहिया एक टाकाक 64 पाइ भेल करैक आ एक पाइमे आध पौआ, आजुक सबासय ग्राम, चाउर बदामक भूजा भेटल करैक । आजुक लोककेँ बुझयतैक जे गप्प हँकैत छथि । ताहि दिनक डेढ़ आना माने 6 पाइ, आजुक नवका दस पाइमे होटलमे भरिपेट दालि भात एक रसदार, एक भुजिया, चटनी, पापड़ भोजन भेटैक जे आइ काल्हि 20-22 रुपैयामे भेटैत छैक । वस्तु रहै सस्त, टाका रहै महग । तेँ प्राइमरी स्कूलक मास्टरकेँ 6 टाका, हाइस्कूलक मास्टरकेँ 20 टाका आ कालेजक प्रिन्सिपल केँ 50 टाका वेतन भेटैत रहनि । एक टाकामे लोक अपना हाथेँ रान्हि बाढ़ि कऽ खाय तँ सात दिन चलि जाइक ।

पंडित गुणेश्वरझा संस्कृत महाविद्यालयक प्राध्यापक रहथि । 30 रुपया वेतन भेटैत छलनि । मासक अन्तिम सप्ताह रहैक । मुबंई सँ एकटा प्रकाशक अयलनि भेट करऽ । ओ 6 खण्डमे सम्पूर्ण महाभारत छपने रहय । एक खण्डक दाम 2 रुपैया रहैक । एक संग छओ खंड किननिहारकेँ केवल दस रूपैया मे देल करैक । पंडितजी एहन अवसरकेँ हाथसँ जाय देब ठीक नहि बुझलनि । जी जाँति कऽ छबो खण्ड कीनि लेलनि । कीनि तँ लेलनि, मुदा हाथ पर एको पाइ नहि बाँचि गेलनि । मासक 6 दिन शेष छलनि । भोजन हेतु 1 टा टाका चाहियनि । तेँ अपन सहकर्मी एक गोटे डेरासँ डेढ़कोस पर रहथिन । हुनकासँ एक टाका पैंच लेबऽ लेल अन्हरोखे उठलाह । सोचलनि जे अयलाक बादे स्नान पूजा करब । पैंच टाका लऽ घुरबामे कने अबेर भऽ गेलनि । हड़बड़ी मे इनार पर स्नान करऽ गेलाह । ताहि समय ई टयूबबेल सब ठाम नहि भेल रहैक आ ने टकही नोट चलल रहैक । चानीक रुपैया होइक । पैंच टाका डाँड़मे खोसने छलाह । बाल्टीमे पानि भरि स्नान कयलनि । धोती फेरि अंगपोछा पहिरऽ लगला तँ ई सुधि नहि रहलनि जे रुपैया डाँड़े मे खोसि कऽ रखने छी । हड़िरा ढील होइत देरी डाँड़क रुपैया इनारक पक्का चबुतरा पर ठाढ़े खसलनि आ कूदि कऽ इनारमे चल गेलनि ।

अपने कयल एहि गलती पर अपने पर ततेक जोर तामस भेलनि जे दहिना हाथक चारू आङुरकेँ मोड़ि अंगूठासँ दबाकऽ अपने कपारमे ततेक जोरसँ

मारलनि जे अचेत भऽ खसि पड़लाह । कपारमे छलिया सुपारीक आकारक टेटर भऽ गेलनि । होश नहि भऽ रहल छलनि । डेरा छात्रावासक लगमे रहनि । विद्यार्थी सब देखलकनि तँ दौड़ि कऽ आबि उठा पुठाकऽ भिजले धोतीकेँ सम्हारि डेरा लऽ गेलनि । होश भेलापर टेटर जे भऽ गेल रहनि ताहिमे टीस मारऽ लगलनि । मन बेचैन रहऽ लगलनि । हारि-थाकि कऽ राज अस्पताल लऽ गेलनि । ताहि समय उड़ीस जकाँ एतेक डाक्टरो नहि फड़ल रहथि । हँऽ राज अस्पतालमे चारिटा डाक्टर रहथि, जाहिमे एक मात्र सर्जन । पण्डितजीक बेचैनी आ छटपटाहटिकेँ देखि तत्काल सुतबाक सूइ दऽ देलकनि आ अस्पतालमे भर्ती कऽ लेलकनि ।

सूइक असरि जहाँ कम होइनि कि पहिने जकाँ टीस आ छटपटाहटि शुरू भऽ जाइनि । एमहर महाविद्यालयमे घोल मचि गेल । बेराबेरी जिज्ञासामे प्राध्यापक सँ लऽ विद्यार्थी सभ आबऽ लगलथिन । हारि दारि कऽ गाम खबरि गेलनि । पत्नी, बालक, माय सब आबि गेलथिन । तीनचारि दिनक बाद कपारमे भेल ओ टेटर जे कारी छलनि से पीयर भऽ गेलनि । सर्जन डाक्टर कहलथिन-लगैत अछि जे आपरेशन करऽ पड़त ।

आइ काल्हि जकाँ ऑपरेशन हल्लुक नहि बुझल जाइक जे बच्चाक जन्म नहि होइत छैक तँ कुमहड़ जकाँ चट दऽ पेटकेँ फाड़ि बच्चाक जन्म करा देल जाइत छैक । ऑपरेशनक नाम सुनि पत्नी भोकारि पाड़ि कऽ कानऽ लगलथिन, बेटोक मुँह विवर्ण भऽ गेलनि आ छोट भाय थरथर कापऽ लगलथिन । अन्तमे प्राध्यापक लोकनि अबैत गेलाह, परामर्श करैत गेलाह, ज्योतिषीजी जन्मकुण्डली देखलथिन । ऑपरेशनक वास्ते पतड़ा देखि नीक दिन नीक लगन ताकि देलथिन तखन आपरेशन भेलनि ।

एहि घटनाक 15 वर्षक बाद पण्डितजीक एक सहपाठी अयलथिन । कपार पर ऑपरेशनवाला कटल दाग देखलथिन तँ पूछि बैसलथिन ई की थीक ? पहिने तँ ई दाग नहि छल ?

पण्डितजी लजाइत उत्तर देलथिन - ई एक टाकाक मोल केर दाग थीक। क्रोधान्ध होयबाक परिणाम थीक आ सब वृतान्त सुनबैत कहलथिन - रच्छ रहल जे ई क्रोध अपने पर भेल छल । यदि दोसर पर भेल रहैत तँ ने जानि की भेल रहैत । अयना मे जखन जखन अपन मुँह देखैत छी तँ क्रोधपर नियंत्रण रखबाक शिक्षा भेटि जाइत अछि । ◆

वामा हाथ

बौकूझा आ नरायण राउतमे लङौटिया दोस्ती । नवेनव प्राइमरी स्कूल गाममे जहिया फुजलै ताही समय ई दुनू सात-आठ बरखक टेल्ह रहथि । नव नियुक्त मास्टर साहेब ठकि फुसियाकऽ संख्या पुरैबा लेल लऽ गेल रहथिन स्कूल । छओ मास बरखदिन धरि दूनू गोटे एके बेंच पर बैसि कऽ ककहरासँ लऽ किछु खाँत ताँत एकाइ, दोनाइ, बिटगरहा धरि पहुँचि गेल छलाह । तहियाक दोस्ती तहिया कऽ मनमे जे बैसि गेल छलनि से एकाएक अनेक बरखक बाद मनमे उखड़लनि । बात एना भेलै जे -

पढ़ऽ-तढ़ऽमे मन लागनि नहि, कपारमे जते लिखले छलनि ततबा भऽ गेलाक बाद जे अपन-अपन घर आश्रम डेबलनि तहियासँ दूनूक दू दिशा भऽ गेलनि । बौकूकेँ चौदहमे बरखमे मुंगेर जिलाक एक मसोमातक बेटीसँ सम्पत्तिक लोभेँ बाप बिआहि देलथिन । बौकू जे घरजमैया भऽ सासुर बसि गेलाह से बापक श्राद्धेमे आयल रहथि । गाम एकदम छुटि गेलनि ।

नारायण राउत बच्छाक व्यापार आ दूधक कारबार करऽ लगलाह । बीचमे खूब फौदायल रहथि ।

लङौटिया यार जाहि समय बापक श्राद्ध करऽ गाम आयल रहथिन ताहि समय नारायण राउत बच्छाक पैकारी करऽ सुरसंडक बड़दहट्टा गेल रहथि । अनेक ठामक पानि पीलाक कारणे बड़ी जोर सर्दी भऽ गेलनि आ ज्वरो लागि गेल रहनि । विलमि कऽ गाम घुरलाह ता बौकू श्राद्ध सम्पन्न कऽ चल गेल रहथि, दूनू यारकेँ भेट नहि भऽ सकलनि ।

बौकूक ससुर रहथिन एकटा महंथक भंडारी । महंथस्थान पर नागा,

पहलवान, गबैया, कीर्तनियाँ सभक भंडारा होइक । हुनकर देहान्तक बाद उत्तराधिकारी भेलथिन बौकू ओझा तँ स्थान एको दिन लेले छोड़ब कठिन भऽ जाइत छलनि ।

एमहर नारायण राउत एक बेर बड़दहट्टासँ जे दू दाँतक एक जोड़ा बच्छा कीनि कऽ अनलनि से बेचनिहार कतहुसँ चोराकऽ अनने छलैक । ओ तँ चटपट बेचलक आ लऽ दऽ कऽ घसकल । नारायण ई नहि सोचि सकलाह जे एतेक सस्ता किएक दऽ रहल अछि उनटे मनसूबा बान्हऽ लगलाह जे तीनिएँ मास एकरा पोसि लेब तँ आइ पाँच हजार जे देबऽ पड़ल अछि से बीस हजार भऽ कऽ पलटत ।

जकर बच्छा चोरी भेल रहैक से धग्गड़ गमैया नेता छल ओ थानामे सनहा लिखा देने छलैक । ओकर नौकरक संग दूटा सिपाही हाट पर खोज करऽ आबि रहल छलैक आ नारायण राउत दुनू बच्छाकें जोड़ने दुनूक कंठमे तुरन्त घंटी कीनि लटका टन-टन, टुन-टुन शब्द सुनैत हकने जा रहल छलाह । हाट सँ बाहर होइते सिपाहीक आमना-सामना भऽ गेलनि । ई जोड़ा बच्छा अपन चिन्हार पालक अर्थात नेताजीक नौकरकें देखिते एक झटका मारलकनि आ नारायण राउतक हाथसँ डोरी छूटि गेलनि । ओ बच्छा सोझे ओकरा लग जाकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक । ओकरा अपन चोरी गेल जोड़ा बच्छाकें देखि खुशीक ठेकान नहि रहलैक । नारायण राउत तँ रङल हाथ पकड़ा गेलाह । हक्का-बक्का भेल मुँह बौने रहि गेलाह । पुलिसकें गवाहिओ तकबाक काज नहि पड़लैक, बच्छा अपन उपस्थितिएसँ साबित कऽ देलकै । नारायण राउतक डाँड़मे पुलिसक रस्सी बन्हा गेलनि । चोरीक केसमे छओ मासक जहल भऽ गेलनि । बाल बच्चा रहबे जे करनि । गौआँ घरुआकें हिनकर कोनो थाह पता लगबे ने कयलैक जे ई कतऽ गेलाह अथवा कोमहर बौड़ि गेलाह ।

घरनी एकसरुआ रहथिन, धीयापूता नहि रहनि । दिन गनलनि, मास गनलनि, तीन मास प्रतीक्षामे बीति गेलनि । घरमे जे अन्न रहनि से मड़ुआसँ लऽ खेसाड़ी धरि सठि गेलनि । चिंतासँ देह काँट-काँट भऽ गेलनि । हारि-दारि कऽ नैहर चल गेलीह । नैहर रहनि कोसिकन्हा दिस, उठि कऽ क्यो आबहु नहि कहलकनि, कारण गाममे हैजा पसरल छलै । बुझाइछ जे नैहरक माटि हिनका बजाकऽ लऽ अनने छलनि । पाँचे दिनक बाद हैजा पकड़ि लेलकनि, शरीर त्यागि देलनि । नारायण राउतक कोनो सूर पता नहि भेटलाक कारणे श्राद्धो नहि

भेलनि । भाय लोकनि तेराति दिन नहकेश करा पिण्डदान कऽ फारकती पाबि लेने रहथिन ।

नारायण राउत जहलसँ छुटलाह तँ सोझे गाम अयलाह । घरक दुआरिधरि दूबि मोथा जनमल देखि घोर चिन्तामे पड़ि गेलाह । अड़ोस-पड़ोससँ पता लगलनि जे हुनकर घरनी कतेको मास पहिने नैहर चल गेल छथिन । नारायण राउत उनटे पैरेँ विदा भऽ गेलाह । ओतऽ पहुँचलापर समाचार सुनलाक बाद किछु काल आँखिक सोझा अन्हार भऽ गेलनि । मनकेँ स्थिर कयलनि तँ जेना संसारसँ तुलसीदास जकाँ विरक्ति भऽ गेलनि । दू तीन दिन सासुरमे अन्यमनस्क भावें काल काटि एक दिन अन्हरोखे उठि विदा भऽ गेलाह । बौआइत ढहनाइत सूर्यास्तः प्राय समयमे एक मन्दिरक त्रिशूल देखलथिन ओम्हरे पैर बढ़ि गेलनि । ओ एक वैरागीक महन्थस्थान छलैक । ओहि ठाम आश्रय भेटि गेलनि ।

आब नारायण राउत सँ नारायण दास भऽ गेलाह । केश दाढ़ी बेस भकड़ार भऽ गेलनि । अनेक आश्रित बाबाजी ओतऽ रहैत छलाह जे लोकनि बेराबेरी पार लगाकऽ भंडारा लै भानस करैत जाइत छलाह ।

संयोग एहन जे बौकू झा जाहि महन्थ स्थान पर रहैत छलाह तकरा एहि महान्थस्थानसँ कोनो जतियारे सम्पर्क रहैक । महन्थ कोनो खास काजक लेल ओहिठामक महन्थ स्थान पर पठौलथिन । बौकूझा पुछारि करैत एतऽ पहुँचलाह । परिसरक मुँहथरिए पर भानसक घर रहैक । पहरराति बीति गेल रहैक । नारायण दासक पार छलनि । चुलहा पर हण्डा चढ़ल रहैक । बाहरसँ आवाज देलथिन क्यो छी ? नारायण दास बहरयलाह आ सोझाँमे बौकूझाकेँ देखि कने चकित भेलाह । ई तँ चीन्हि गेलथिन, मुदा भकड़ार दाढ़ी मे नुकायल मुँह रहलाक कारणे बौकूझा नहि चीन्हि सकलथिन । नारायण दास अपन उत्सुकताकेँ दबौने बड़ आदरसँ ओहि ठाम बैसौलथिन, मुदा अपन परिचय नहि देलथिन ।

के थिकहुँ ? कतऽ सँ आयल छी ? कोन काज अछि ? कखन विदा भेलहुँ ? कतेक दूरसँ अयलहुँ अछि । आदि अनेक प्रश्न पुछैत, उत्तर पबैत नरायण दास अहियाबथि जे एतेक गप्प कयलाक बादो ई चीन्हैत अछि वा नहि । एहि बीचमे चुलहाक आँच पझाय लगनि तँ दौड़िकऽ आँच उसका आबथि, मुदा वामा हाथकेँ ऊपर दिस उठा लेथि । लङौटिया यार रहलाक कारणोँ नारायण दासक आवाज आ गप्प करबाक भंगिमा देखि बौकू झाकेँ कने मने चिन्हार सन

बुझाइन, किन्तु नारायण राउतकेँ एत' होयबाक कोनो संभावना किएक बुझैतनि नारायण दासकेँ सेहो मनमे रहि रहि कऽ अपन परिचय खोलि देबा लै हुदुक्का मारनि । अन्ततः नारायण दासकेँ नहि रहल गेलनि-पूछि बैसलथिन - यार ! हमरा चिन्हलैँ नहि ? बौकूझाक भ्रम जेना टूटि गेलनि यार संबोधन सुनि कहि उठलथिन -नारायण राउत ?

नारायण दास भरि पाँज पकड़ैत कहलथिन- आब नारायण राउत नहि नारायण दास, फेर आँच उसकाबऽ गेलाह तँ बौकू झा टोकि देलथिन -यार ! वामाहाथ ऊपर कऽ किएक उठा लैत छेँ ? नारायण दास कहलथिन - कहबै छेँ बाभन आ एतनीओ गो बात नहि बुझै छिही जे अइ हाथसँ पनिछूआ करैत छी । ओकरा चुलहा लग केना लऽ जेबै ? बौकूझा कहलथिन - एहि हाथसँ जाहि अंगकेँ धोइत छै से अंग तँ चुलहाक सटले रहैत छौ । ◆

मकान

चारि-पाँच मासक बाद त्रिवेणी बाबूसँ भेट भऽ गेल । ई एक वरिष्ठ ओकील साहेबक कारपरदाज छथि, संगहि कातिबक काज सेहो करैत छथि । ओकील साहेबक आमदनी देखि मन ललचाइत रहैत छनि । तेँ अपने एकटा बेटाकेँ ओकील बनयबाक सेहन्ता मनमे पोसने रुख-सुख खा कऽ, मैल कुचैल, मोट वस्त्रे पहिरिकऽ, लालटेम-डिबियाक टेमीकेँ छोटराखि कऽ समय बितबैत छलाह । कल्पना-लोकमे नगरमे अपन एक सजल-धजल मकान टेबुल-कुर्सी लगौने ओकील बेटाकेँ चारूकातसँ घेड़ने मोकदमेबाज सभक झुंडकेँ देखल करथि ।

एहि स्वप्नकेँ साकार करबा लै पाइ-पाइ जोड़ि नगरक बीचमे दू कट्ठा भूमि किनबामे पन्द्रह वर्ष लागल रहनि । पाँच धूर एक कोनमे दस हाथक एकटा खपरैल ठाढ़ कयने रहथि । ताहीमे चारू बेटाक संग अपने हाथ झरकाबथि । एकन्नीकेँ दुअन्नी, दुअन्नीकेँ चौअन्नी बनबैत टाका जोड़ि रहल छलाह । किछु पूजी पाँच बरखमे एकट्ठा भेलनि तँ एक दिन मकानक न्यों लेबाक दिन तकौलनि, हित अपेक्षितकेँ हकार दऽ वास्तु पूजा कयने रहथि तँ हमरो हकार देने रहथि ।

आइ भेट भेला पर सबसँ पहिने यैह पुछलियनि, त्रिवेणीबाबू ! मकानक की प्रगति अछि, प्रश्न सुनैत देरी बुझायल मनक आक्रोश जेना बान्ह तोड़ि कऽ बाहर होअय लगलनि । कहलनि– 'पंडितजी ! हमरा एहि जन्ममे मकान नहि भऽ सकत ।'

'नहि भऽ सकत ? से किएक ? आमदनी तँ बेजाय नहि अछि ?'

'पंडितजी जेहन हमर ओकाइत अछि जतेक थोड़ पढ़ल-लिखल छी ताहि गुने छोट-छोट आकीलो लोकनि हमरा एते नहि कमाइत छथि ।'

'तेँ तँ कहलहुँ जे मकान नहि होयत से किएक बजैत छी ?'

कहलनि, त्रिवेणी बाबू– पढ़ने तँ अपने हमरासँ बेसी छी तेँ अपनेकेँ हम की कहब । तैयो बयसमे तँ अपनेसँ बेसी हमही छी । जीवनक अनुभव तँ अपनेसँ बेसी हमरे अछि । धन आ विद्या ई दूनू वस्तु बिना तपस्ये नहि होइत छै । जीह आ... अपने लग ओ शब्द कोना बाजू, ई दूनू जाधरि समटि कऽ नहि राखत ता धरि विद्या आ धन-अर्जित नहि कऽ सकैत अछि । हम बलिस्ताक बदला पजेबा सिरहन्ना लऽ सुतैत रहलहुँ, दालि कहिओ ने बघारलहुँ जँ बघारनहुँ तँ तरकारी नहि कयलहुँ आ हमर ई लालबाबू सब जे छथि तनिका सबकेँ बलिस्ता चाहियनि, ताहिमे खोल, ताहिपर खोल सब पर साबुन रगड़ता लीलमे बोरता । दालि बघारल रहतनि, कहबनि जे फोड़नमे देल मेरिचाइ, तेजपात स्वाद लै चाटि लैह चोभि लैह से नहि उप्परसँ तरकारी सेहो चाही । अहीं कहू तखन मकान बनतै ?'

हमरा बलिस्ता आ बघारल शब्दक अर्थ आइए लागल । शान-बघारब सुनिते छलिऐ अर्थ नहि लगैत छल । ◆

बड्ड जरूरी

2004क भयंकर बाढ़ि, सौंसे नगर-गाम समुद्र बनल । घरे-घर पैसल पानि । कतेको छत पर, जकरा से नहि, से चार पर. जकरा सेहो नहि से गाछ पर वा बान्ह पर ।

दस बजैत राति हुनकर फोनक घंटी घनघना उठलनि तँ चित आशंकित भऽ उठलनि । पत्नी गेल छथिन पटना । एही बीच बाढ़ि चारू दिस सँ सम्पर्क काटि देलकै । जे जतहि रहय ततहि स्थावर भऽ जाय । सशंकिते मने चोंगा उठौलनि– उँह के बजै छी ?

'हम फूदन– जजुआड़सँ बाजि रहल छी ।

'नहि चिन्हलहुँ ।'

'चिन्हबोने करब, हमरा अहाँकेँ भेटे नहि ।'

'तखन' ?

'हमर भाय अहींक महल्लामे डेरा रखने छथि । हुनकेसँ हमरा अहाँक नम्बर भेटल अछि । बड्ड जरूरी अछि तेँ कष्ट देल । कृपा कऽ हमरा भाइ साहेबसँ दूइयो मिनट गप्प करा दी ।

एखन ? एहि 10 बजे राति कऽ ? हमरा आङनमे भरि जांघ आ घरमे भरि ठेहुन बाढ़िक पानि ढूकल अछि । चौकी पर बैसल छी । बिजली कटल अछि। किरासन तेल नहि भेटैत अछि । मोमबती अछि मुदा सलाइ भीजि गेल अछि । अन्हारेमे बैसल छी ।

फोन पर आबाज अयलनि– से तँ बुझलहुँ, मुदा बड्ड जरूरी अछि। कने कृपा करू, नेहोरा करै छी।

उत्तर देलथिन– जँ क्यो अहाँक घरमे मरणासन्नो होथि तैयो एहि अन्हार रातिमे क्यो अपन प्राण गमाबऽ लै बाहर नहि जा सकैत अछि। एतबा कहि चोङा राखि देलथिन।

दू मिनट बाद फेर घंटी बाजि उठलनि। चोङा उठौलनि– हँऽ के ?

उत्तर अयलनि– हम जजुआड़सँ फूदन बाजि रहल छी। हमरा भाइक नाम थिकनि कूदन। एखन कृपा नहि कयल तँ कम-सँ-कम भिनसरमे समाद कहि सकैत छियनि ? बड्ड जरूरी अछि।

हँऽ, समाद कहि दिअऽ, हम चेष्टा करब।

चेष्टा करब से नहि अवश्य, सँ अवश्य समाद कहि दियनि जे महीस पाड़ा तरे बिआयल। ◆

कथा-कथान्तर

आइ ककर मुँह देखि कऽ उठलहुँ से नहि जानि । भोरे उठि पोखरि दिस गेलहुँ । पोखरिक घाटे पर दतमनि कऽ रहल छलहुँ कि एक दिससँ कारी कका आबि गेलाह । हमरा देखैत देरी हुनका कोन सिरिंग चढ़ि गेलनि जे हमरा फज्झतिक तऽर कऽ देलनि–मास्टरी करैत जाइत छऽ ? सबकेँ नेहोरा कयने फिरैत छहक जे अपना धीया-पूताकेँ मातृभाषा पढ़बिऔक, अपना भाषाक उन्नति सँ समाजक उन्नति होयत । एहने-एहने पाठ पढ़ने धीयापूता विद्वान आ बुद्धिमान होयत ?

पहिने हमरा भेल जे कारी कका हँसीमे कहि रहलाह अछि । तमसायल रहबाक अभिनय मात्र कऽ रहल छथि । दू मिनटक बाद हँसि कऽ अपन मुद्रा बदलताह, मुदा से भ्रम छल । जहिना-जहिना बजने जाथि तहिना-तहिना मुँह तमतमायल जाइत छलनि । भोरुका पहर, भरि गामक निकास एही पोखरि दिस, तेँ क्रमहि टोलक पाँच सात गोटे तावत धरि मोहार पर पहुँचि जाइत गेलाह । हम बकर-बकर हुनकर मुँह देखैत रहलियनि, ओ बजैत-बजैत अपस्याँत भऽ गेलाह । तखन हमरे टोलक घरभरन टोकलथिन- कारीकका ! की भेल अछि जे एना तड़ङल छी ?

तखन कारीकका अपन क्रुद्ध होयबाक कारण पर प्रकाश देब आरंभ कयलनि - साँझखन मझिला पौत्र पुछलक -बाबा ! नितम्ब माने की होइत छैक ? हम अकबका गेलहुँ, ताबत दौहित्री आबि पुछलक- बाबा ! अभिसार माने की होइत छैक ? पुछलिऐक दुनूकेँ ई शब्द सब तोरा लोकनिकेँ कतऽ भेटलौक अछि ? दुनू एक्के बेर बाजि उठल – स्कूलमे जे पोथी पढ़ाओल जाइत

अछि 'ताहीमे छैक । पौत्रकेँ कहिओ सकैत छलिऐक जे नेनामे जाहि लगा कऽ पोटा पोछैत छलह अथवा जाहिपर तबला सबकेँ बजबऽ अबैत छैक, मुदा दौहित्रीकेँ की उत्तर दिऔक से किछु ने फुरायल । दुनूकेँ टारि देबाक हेतु कहलिऐक कनेक पोथी आनि कऽ देखऽ दे । पोथी लऽ कऽ पढ़लहुँ, हमरा तँ फूकि देलक जे एहन-एहन शिक्षा-प्रद पाठ जेँ पढ़ाओल जाइत छैक तँ ने आइ काल्हि सब नेना अभिमन्युए भऽ कऽ जन्म लैत अछि, जकरा गर्भेसँ चक्रव्यूह भेदन अबैत रहैत छैक ।

घरभरन फेर टोक दैत कहलथिन– कारीकका ! की छलैक पोथीमे जे एना पढ़िते देरी लेसि देलक !

कारीकका कनेक नरम भऽ गेल छलाह । डाँड़सँ चून-तमाकुल बाहर कऽ बामा तरहत्थीपर दऽ रगड़ब आरम्भ करैत जेना गप्पकेँ मोनमे अँटा लेलनि तखन बजलाह – सम्बन्धेँ तोँ भातीज अवश्य छह, मुदा छह तँ लगौँटिया तेँ तोरा कहबामे ओतेक संकोच नहि – एकटा खिस्सामे नितम्ब शब्दक प्रयोग छैक। ओहि खिस्सामे सारांश एतबे देखबामे आयल जे कथाक नायक नमरी नढ़ेर अछि । रेलगाड़ीमे संग चल अबैत एक चौदह पन्द्रह वर्षक बालिकाक प्रति ततेक अनुरक्ति भऽ गेलैक जे आङुरोक स्पर्श कोनहुना भऽ जाय ताहि वास्तेँ भरिबाट चेष्टा करैत रहि गेल । संयोग नहि भऽ सकलैक तऽ अन्तमे ओकरा उतरि गेलापर ओहि स्थानपर जा कऽ बैसि अपन आकांक्षाक आंशिक पूर्ति कयलक । आब नितम्ब शब्दक प्रयोग कतऽ भेल होयतैक से बूझि जाहक । ई पढ़ि कऽ बाल-बच्चा की सीखत ?

हम साहस कऽ कहलियनि – कक्का ! कथा लिखलनि केओ आ अहाँ दसटा कथा हमरा मङनीमे कहि देलहुँ । हम सब की बाजू ? जँ किछु बाजब तँ कतेकोसँ कथा-कथान्तर भऽ जायत । ई काज समाजक थिकैक । ताबत एक गोटे डीजल प्राप्तिक सुखद समाचार लऽ पहुँचि गेलनि, कारीकका तरहत्थीपरक तमाकूकेँ झाड़ि टोरतर दैत ओकरे संग चलि देलनि । ◆

पहिने आनन्द

वैदिकजी पहिल कन्यादान कयने रहथि तँ भरि गामक उँचका दलानवलालोकनिक ओहिठामसँ समांग लोकनि पेट्रोमेक्स लै छिछिया आयल रहथिन– जनिकर दुरुस्त रहनि से भङठल रहबाक लाथ लगा नहि देलथिन आ जनिकर भङठल रहनि से 'किछु गड़बड़ छै, कने मिस्त्रीसँ देखा लेब' से कहिकऽ एहि आशासँ देलथिन जे एही क्रममे भङठी भऽ जायत । सेहो मात्र दू गोट भेटलनि । वैदिकजी माथ पर बल दैत पुछलथिन – फल्लाँकेँ छलनिहें, चिल्लाँकेँ छलनिहें, सभक भङठले छनि ?

भागिन कहलथिन– मामा, घोड़ेवाला केँ घोड़ा आ हाथिएवाला केँ हाथी भेटैत छै, बकरी पोसनिहारकेँ दाउन करत ताहू लै बड़द नहि भेटैत छै । जे वस्तु अपना रहत सैह वस्तु बेर काल पर मङनी भेटि सकत । शहरमे भाड़ापर बहुओ चाही तँ भेटि जायत । देहातमे भाड़ा लेता कोना, मङनी देता किएक ? ओही भङठलहा दुनूक भङठी करा कोनहुना काज चललनि । मुदा भागिनक बात मनमे गड़ि गेलनि ।

दोसर कन्यादान जखन स्थिर भेलनि तँ ओ बात मन पड़ि गेलनि । सोचलनि, ई तँ दोसरे थिक, एतऽ तँ पञ्च कन्या स्मरेन्नित्यं महत्पीड़ा प्रदायिका तीन टा बाँकिए अछि । जेँ एतेक खर्च होयबे करत एही लागल दूटा पैट्रोमेक्स कीनिए लेल जाय । मुदा एहि बातकेँ एखन गुप्ते राखब । तखन चिन्ता भेलनि जे भेटत कोन दोकान मे ? पुछबै जँ ककरो तँ रहस्य फुजि जायत । सोचैत ध्यान मे अयलनि जे तेल–मसाला जाहिठामसँ अनैत छी ताहि साहुजीकेँ बूझल हेतैक । सैह कयलनि । साहुजी कहलकनि–टाबरपर चल जायब, पश्चिम रुख के बड़की गो दोकान देखबै, कुर्सी सब लगल होतै, पंखा चलैत होतै, ओही ठाम मिलत ।

ओहि दिन आरो जगजियार त्रिपुण्डपर रक्त चन्दनक ठोपकऽ धोबीघाटसँ आयल धोती, ताहिपर चपकन, ताहिपर तौनी, माथपर पाग, हाथमे छड़ी लऽ सजिधजि कऽ चलला वैदिकजी टावर– जेना कोनो सभाक अध्यक्षता करऽ जाइत होथि । टावर पर जा दोकानक विस्तार, कुर्सीक कतार, रंगविरंगक वस्तुक अमार, ग्राहकक भरमार देखि चकबिदोड़ लागि गेलनि । हिनका पहुँचिते एक सुदर्शन तरुण पुछलकनि– की लेबै ओझाजी ।

वैदिकजी नीक जकाँ तरुणक मुँह निहारैत कहलथिन– जे लेबऽ आयल छी से तँ लेबे करब, पहिने आनन्द लेबऽ दिअऽ । से कहैत कुर्सीपर बैसि तरुण कें पुछलथिन–अहाँक घर फतेहपुर थिक ? तरुण कहलकनि– से काहे ? वैदिकजी कहलथिन– नहि बुझलहुँ, हमर विवाह फत्तेपुरे ने थिक । हमरा ओही गामक लोक ओझाजी कहैत अछि आ अहाँ ओझाजी कहलहुँ से ततेक आनन्द भेल जे की कीनऽ अयलहुँ सैह बिसरि गेल । थम्हू, मन पाड़ऽ दिअऽ - एतबा कहि कुर्सी पर बैसल आँखि मूनि लेलनि । ◆

हम आँखिक डाक्टर

नैयायिकजी जहिना न्यायशास्त्रक विद्वत्तामे बेजोड़ छथि तहिना लोकिकताक ज्ञानमे बेजोर । चश्मा पहिरने व्यक्तिकेँ देखि ने जानि ओकर एतेक धाख किएक भऽ जाइत छनि जे अपन नामो बिसरि जाइत छथि । ओना अपनहु अनुभव होइत छनि जे एना किएक भऽ जाइत अछि, मुदा से ओहि व्यक्तिक परोक्ष भेलाक बाद ।

छथि तँ नैयायिक, मुदा से होइतो भगवान अशुतोषक परमभक्त । शिवभक्तक प्रथम लक्षण जे शिवसायुज्य प्राप्त करबाक हेतु एहन चंचल चित्त केँ विजयाराधना बिनु एकाग्र राखब कठिन, तेँ त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः चलैत छनि । एहने एकाग्र चित्तक स्थितिमे एक दिन मनन करऽ लगलाह– चश्मावाला सँ धाख कोना छूटत ? अन्तरसँ जेना क्यो बाजि उठलनि – 'विषस्य विषमौषंधम्' किएक ने अपनहुँ चश्मा लगायब आरम्भ करी ? फेर भेलनि आँखिमे कोनो विकारतँ अछि नहि, तखन बिनु नेत्र विशेषज्ञक परामर्श लेनहि टीशन सब पर बिकाइत कोनो चश्मासँ नेत्रविकारो उत्पन्न होयबाक संभावना । नेत्रविशेषज्ञक परामर्शमे व्यय अवश्यंभावी आ से निश्चित रूपेँ अपव्यय होयत । पुनः अन्तरसँ आवाज अंयलनि – आँखिमे रोग नहि अछि, किन्तु चश्मावालाकेँ देखि जे मन कोनादन करऽ लगैछ से तँ निश्चिते कोनो मनोरोग थिक आ रोग नेत्र विशेषज्ञक परमर्शसँ दूर हो, तेँ से अपव्यय कोना ? अन्ततः कोनो आँखिक डाक्टरक ओतऽ जयबाक निर्णय लेलनि ।

नियारि भासिकऽ एक दिन डाक्टर ओतऽ गेलाह । जाइत देरी कम्पाउण्डर एकटा पुर्जापर नाम पता लिखि फीस लऽ भीतर जा, पुर्जा नंबर पर लगा, एकटा शीशी आनि, एक-एक बुन्द दुनू आँखिमे दऽ कहलकनि – आँखि बन्द कयने

एक घंटा एही ठाम बैसू, जखन नाम पुकार होयत तखन भीतर चल जायब । एक घंटा कानमे पड़िते नैयायिकजीक मन पर अस्सीमन पानि पड़ि गेलनि । मनहिमन कहलनि, जँ पहिने सँ बूझल रहैत जे आँखि मूनि एक घंटा ध्यानमग्न रहऽ पड़ैत छैक तँ माला सेहो लेने अबितहुँ । मालाक अभावमे करमाला पर ओं नमः शिवाय जपैत समय कटलनि । एक घंटाक बदला डेढ़ घंटा पर पुकार भेलनि । भीतर गेलाह । डाक्टर कुर्सी पर बैसबाक इशारा करैत पुछलथिन - की कष्ट अछि ? सुझबामे कष्ट अछि ? कुडिआइत अछि ? नोराइत अछि ? झलफलाइत अछि ? कहिओ लाल भऽ जाइत अछि ?

नैयायिकजी- जी नहि, से सब नहि होइत अछि ।

डाक्टर– तखन ?

नैयायिकजी ई कोना कहथुन जे चश्मा पहिरने लोककेँ देखि धाख होइत अछि, मुदा किछु तँ कहऽ पड़तनि । कहलथिन - तकवामे आसकति होइत अछि । होइए जे के ताकय ।

डाक्टर कहलथिन - हम आँखिक डाक्टर छी, आसकतिक नहिं । ◆

सोहारीक जरुआ

ताहि दिनक बाद थिकै जहिया लोक पढ़बाक हेतु काशी जाइत छल । ने रेल रहैक ने बस-तस । पाथेय बन्हलक आ पोथी-पतड़ा संग लेलक, पैरेँ बिदा भेल । राति विराति जतऽ आश्रय भेटलैक ततऽ विश्राम कयलक । समाजो एहन रहैक जे विद्या अर्जन करबाक हेतु जाइत अतिथि अभ्यागतकेँ आश्रय देबामे अपन भाग्यकेँ धन्य-धन्य मानय ।

काशी थिकनि अन्नपूर्णाक क्षेत्र, जाहिठाम अन्न बिना क्यौ मरि नहि सकैत छल । एखनहुँ अन्नकूट पर्व ओतहिटा मनाओल जाइत छैक । काशी सब दिनसँ केन्द्र रहलैक अछि विद्याक । हिन्दू विश्वविद्यालय तँ बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे स्थापित भेल अछि, मुदा ई नगरी अदौसँ संस्कृत वाङ्मयक सब शास्त्रक अध्यापनक हेतु विख्यात रहल अछि । पाण्डित्यक पूर्णता काशीमे बिनु पढ़ने मानले ने जाइत छलैक । छबो मास, गोटेको वर्ष काशीसँ पढ़ि कऽ आयल व्यक्तिकेँ समाजमे मान्यता भेटि जाइत छलैक ।

वीरभद्र एक गरीब ब्राह्मणक बेटा । बाप गराँमे ताग पहिरा स्वर्गवासी भऽ गेलथिन । जेठ भाय महिसवारे रहि गेलथिन मुदा वीरभद्रकेँ पूर्व जन्मक संस्कार छलनि । उपनयन आ पिताक मृत्यु एक हर्ष आ एक विषादक प्रभाव वीरभद्रक किशोर मनपर आश्चर्य रूपेँ पड़लनि । संगहि पढ़बाक उत्कट आकांक्षा जीवनमे संघर्ष करबाक प्रेरणा देलकनि । साहस कऽ मायकेँ कहलनि– मन होइत अछि पढ़बा लै हमहूँ काशी जइतहुँ ।

माय दिक्केँ-सिक्केँ घर-आश्रम चलबैत छलथिन । सम्पत्तिक नाम पर एकटा लगहरि महीस आ आङनमे एकटा चर्खा, तकर अलावे भगवानक देल दू

टा हाथ पैर । किछु चर्खा काटि, किछु गोबर पाथि, किछु कुटाओन-पिसाओन कऽ निमहैत छलीह । बेटाकेँ पढ़बाक उत्कण्ठा देखि मनमे हुलास भेलनि । पाथेय लै किछु अन्न आ चारिटा टाकाक ओरिआन कऽ देलथिन ।

ज्यौतिषीसँ दिग्बल, सम्मुख चन्द्रमा, सिद्धियोग आदि तकबा कऽ बाबा विश्वनाथक स्मरण करैत विदा भेलाह । चलबाक काल अपन मायकेँ गोड़ लगबासँ पहिने सकुचाइत पुछलनि– काशीसँ घूरब तँ तोरा ले सनेस की लेने अयबौक ।

माय कहलथिन– तोँ जे विद्या अर्जन करबह सैह ने हमरो सनेस होयत। ताहिपर वीरभद्र कहलथिन– विद्या तँ वस्तु थिकै नहि जे ओहिमेसँ एक मुट्ठी कऽ बाँटि देल जाय । हँऽ विद्या प्राप्त कऽ ताहिसँ जे धन उपार्जन करैत अछि लोक, ताहि धनसँ परिजन-पुरजन, सर-सम्बन्धी, इष्ट-मित्र, संग-समाज जकरा चाहय तकर यथासंभव सहायता कऽ सकैत छैक, मुदा तत्काल किछु सनेसक नाम पर नहि दऽ सकैत छैक । हमरा कोनो वस्तु कह जे तोरा सबसँ नीक लगैत होउक । बेटाक बुद्धि देखि आ तर्क सुनि आनन्दक नोर मायक आँखिमे छलछला गेलनि । आङनमे ठाढ़ भऽ आँचर दूनू हाथेँ पसारि दिनकर-दिनानाथसँ प्रार्थना कयलनि– हे दिनकर दिनानाथ ! हमरा बच्चाक सब दिन एहने बुद्धि-विवेक रहैक, आङे-समाङे नीकेँ ना कुशल रहि विद्या अर्जन कऽ घर घुरि आबय । किछु काल गुम्म रहि सोचैत रहलीह तखन आँचरसँ नोरायल आँखि पोछलनि आ बेटा दिस तकैत बजलीह– जे कहबह से लेने अयबह ?

वीरभद्र कहलथिन– जखन कहैत छियौक तखन नहि अनबौक ?

माय कहलथिन– हमरा गहूमक सोहारीक जरुआ सबसँ बेसी नीक लगैत अछि । काशीमे सुनै छिऐ एक साँझ सब गहूमेक सोहारी खाइ छै । जखन सोहारी पकबिहऽ तँ कने झूर कऽ आगि पर फुलबिहऽ आ खयबासँ पहिने सबकेँ पटकि कऽ झाड़ि लिहऽ । झाड़ला पर जे झड़ुआ बहरयतह से ओरिया कऽ कतहु रखने जइहऽ ।

वीरभद्र कहलथिन– हँसी करैत छेँ ?

माय कहलथिन– हँसी किए करबह तोरासँ । हमरा जे नीक लागत सैह ने सनेस भेलै । ई बात ओ ततेक गम्भीर भऽ कऽ कहलथिन जे वीरभद्रो गंभीर भऽ गेलाह । अन्तमे मायकेँ गोड़ लागि विदा भऽ गेलाह ।

काशीमे एक बरख रहलाक बाद गाम घुरबाक उत्कण्ठा भऽ गेलनि। एहि बीच दिनमे एक सेठक सदावर्त चलैत छलैक ताहिमे बहुतो छात्रकेँ भोजन भेटैत छलैक ईहो ताहीमे खाथि आ रातिमे अपने सोहारी पकबथि। ओहिकालमे माय मन पड़ि जाथिन तँ सोहारीकेँ खूब झूर करथि जे कने बेसी जरुआ होइनि। जाहि झोरामे जरुआ रखैत छलाह से झोरा पूरा भरि गेलनि आ तखने सँ गाम जयबाक इच्छा जोर मारऽ लगलनि। पोथी पतड़ा एतहि छोड़ि एक बेर गामसँ भऽ अयबाक निश्चय कऽ जनिकासँ पढ़ैत छलाह तनिकासँ आज्ञा लऽ गाम चलि देलनि। पैदल यत्रा मे 20–22 दिन लोककेँ बाटमे लागि जाइक। वीरभद्र अबैत-अबैत गाम पहुँचलाह। आजुक समय तँ छलैक नहि जे पहिने फोन कऽ देने रहितथिन। एकाएक आङनमे बेटाकेँ देखि मायकेँ हर्षसँ धरतीपर पैर पड़बे ने करनि।

वीरभद्र सबसँ पहिने झोरा मायक हाथ कऽ दैत कहलथिन– ले अपन सनेस। बूढ़ी घरसँ सूप अनलनि आ झोराकेँ ओहिमे उनटा देलथिन। तेना कसि कसि कऽ झोरामे जरूआ कोंचल छलैक जे सूप उमडाम भरि गेलनि, थोड़ेक चारूकात छिड़िआइओ गेलनि। आँखि निड़ारि-निड़ारि कऽ, चुटकीसँ मलि मलि कऽ देखि, महिसिक नादिमे लऽ जा कऽ उझीलि देलथिन। से देखिकऽ वीरभद्रकेँ ठकमूड़ी लागि गेलनि। पुछलथिन एतेक यत्नसँ हम एकरा रखलहुँ, काशीसँ गाम धरि हाथ फेरि फेरि कऽ उघैत अयलहुँ आ तोँ ई की कयलेँ ?

माय उत्तर देलथिन– सुनह– कहबी छैक जे गहुमनक कटने लोक बाँचिओ सकैत अछि, गहूमक कटने बाँचब कठिन। परदेशमे छलाह, काँच कोचिल सोहारी जँ खयना जइतह तँ पेट खराब भेला पर के देखितह ? तेँ कहने छलियह जे जरुआ सनेस लेने अबिहऽ। मायक बात सुनि वीरभद्र अवाक रहि गेलाह। ◆

कबुलाक कुफल

छठि पर्वक प्रातः सुफल बाबूक दलान पर रही बैसल । सुफल बाबूक गाम ओ थिकनि जाहि गामसँ चारि पुश्त पहिने हमर पूर्वज उपटि कऽ गेल छलाह । केशकट्टीक सम्बन्ध एखनहुँ हमरा ओहि गामक देयाद लोकनिसँ अछिहे ।

देयादमे एक बेस वृद्धक मृत्यु गत वर्ष भऽ गेल छलनि । श्राद्धमे उपस्थित रहब परम आवश्यक रहितहुँ मियादी ज्वरमे रहलाक कारणेँ उपस्थित नहि भऽ सकल रहियनि । देयाद तँ देयादे होइत छैक, कनेको चूक कतहु भेल, ओकरा गीरह बान्हि लैत छैक । तेँ ई पहिल वर्षी छलनि, बिना कोनो पूर्वक सूचना देने ओही दिन हम पहुँचि गेल रहियनि । ओ लोकनि हमर ई आकस्मिक आगमनसँ चकित रहि गेल छलाह । आजुक समय तहिया नहि छलैक जे फोनसँ श्राद्धक अवसर पर अपन उपस्थिति सूचित कऽ देने रहितियनि ।

बुझायल जे हमर उपस्थितिसँ हुनका सभक मनमे जे हमरा प्रति कने-मने मैल बैसि गेल रहनि से धोआ गेलनि । अतिशय आग्रह पूर्वक रोकि लेने रहथि। हुनका सभक रोच राखऽ लेल दू दिन अटकऽ पड़ल । सब गोटे जनिते छिऐक जे कामकाजी लोककेँ निरर्थक बैसल नीक नहि लगैत छैक । गप्पे करू तँ कतेक आ ककरा सँ ? एकाएक ध्यानमे जेना बिजलौका जकाँ कहियोक सहपाटी सुफल बाबू मन पड़ि गेलाह । एहि गामक दोसर टोलमे सुफल बाबूक घर । सेवा निवृत्त भऽ ओहो गामेमे रहैत छलाह । भातिज लोकनिकेँ कहि कऽ सुफल बाबू ओतऽ चलि पड़लहुँ । पचीस-तीस वर्षक बाद सुफल बाबूसँ भेंट भेल छल । ओ एकाएक हमरा देखि अकचका उठलाह । अपनें चौकी पर

कल्याणक शक्ति विशेषांककेँ तन्मयतासँ पढ़ि रहल छलाह । हमरा देखि कऽ पहिने अपने झटकि कऽ आङनसँ कंबल आनि ओछौलनि, आह्लादि कऽ बैसबैत पुछलनि - हम कोना मन पड़लहुँ ।

कहलियनि - मनसँ अहाँ गेलहुँ कहिया जे आइ मन पड़ितहुँ । तखन कर्मक्षेत्रमे गेला पर हम पूब आ सुफल बाबू पश्चिम, कोनो संयोग ने होइत छल। बड़ी काल धरि बीतल जीवनक प्रसंग, प्रशासनमे भ्रष्टाचार, समाजमे कदाचार, युवावर्ग मे उद्दण्डता, उच्छृंखलता, विश्वभरि पसरल जाइत आतंक आदि विषय पर चर्चा होइत रहलनि । एहि बीच देखैछी एक ओरि पर भरल चंगेरा खाजा, दोसर ओरि पर चारू कात लड्डू, बीचमे एकटा मोटरीमे पकमान, दूहत्था केरा भार लेने एकटा भरिया भारकेँ कान्ह परसँ उतारि रखैत पुछलकनि - सुफल बाबूक घर कोन थिकनि । हम कहि उठलिऐ - हुनके दलान पर अहाँ ठाढ़ छी ।

सुफल बाबू उठि ओकरा संग आङन गेलाह आ आङनसँ एकटा खूब सुन्दर सीकीक चङेरीमे छोटे छोटे दू टा खाजा, दूटा लड्डू, दूटा ठकुआ, एकटा भुसबा, दू छिम्मड़ि मालभोग केरा एक हाथमे आ दोसर हाथमे एक लोटा जल लेने बहरयलाह । आबि कऽ सोझाँमे राखि देलनि ।

हम पुछलियनि ई भार कतऽ सँ आयल अछि । उत्तर दैत कहलनि- एकरो बड़ी टा खेड़हा छैक । ततबा कहि खेड़हा सुनाबऽ लगलाह ।

आब तँ तीसो बरखसँ ऊपर भऽ गेल होयतै । एक बेर सन्निपात ज्वर भऽ गेल । आब ने उड़ीस जकाँ डाक्टर फड़लैक अछि । ताहि समयमे एहि वज्र देहातमे डाक्टरक कोन पता, पैघ सँ पैघ बिमारीमे एक मात्र वैद्यजी शरण । तीन दिन ज्वर भेला बितलापर हमर पिता एकटा वैद्यजीकेँ बजा अनलनि । ओ पहिने जीह, तखन आँखि अन्तमे दू मिनट धरि नाड़ी देखैत रहलाह । अन्तमे कहलथिन- ज्वराष्टक बीतऽ दियनु माने आठ दिनमे ज्वरकेँ अपने उतरि जयबाक बाट देखि लियौ तकर बाद कोनो औखद देबनि । तावत धरि पानिकेँ खौला कऽ औंटि लेलाक बाद माँटिक कोहामे ठंढ़ा कऽ राखि लेब, जखन कऽ पानि माङथि तखन कऽ देल करबनि । एकर अलाबे आर किछु नहि ।

कहै छी हमर तँ हताश उड़ि गेल, मुदा भेल सैह । आठ दिनक बाद फेर अयलाह, ओहिना नाड़ी देखि झोरीमे सँ 16टा लाल-लाल मसुरीसन बड़िया

बाहर कऽ दैत कहलथिन एकटा कऽ एहि मे सँ बड़िया दुनू साँझ मधु आ तुलसीपातक रसमे मिला कऽ चटा देल करबनि । जँ ज्वर उतरि गेलनि तँ वाह-वाह । जँ नहि उतरनि तँ आठम दिन हमरा खबरि देब ।

बाबू पुछलथिन - आहार किछु, ...वैद्यजी कहलथिन- राम राम, बस औंटल पानि छोड़ि आर किच्छु नहि ।

हम तँ लटि कऽ ओछाओनमे सटि गेल रही । नाय छली एकसरुआ, तेँ बहिनदाइकेँ सासुरसँ मङा लेलथिन । 21 दिन पर पथ्य भेल । निकेँ भेला पर बहिनदाइ कहलनि- हओ सुफल । हम बाबा कपिलेश्वरनाथकेँ कबुला केलियनि जे हे कपिलेश्वरनाथ ! सुफलक प्राण बाँचि जयतनि तँ दण्डप्रणाम करैत गामसँ जा कऽ जल चढ़ौताह । सुफल बाबू गप्पकेँ आगाँ बढ़बैत कहऽ लगलाह- बहिनदाइक बातकेँ सुनि हमरा आदंक पैसि गेल । हम कहलियनि- हय बहिनदाइ । पिलुआ जकाँ चलि कऽ तीन कोस गेल हमराबुतेँ नहि पार लागत। हमहूँ छठि परमेश्वरीकेँ कबुला केलियनि जे हे छठि परमेश्वरी आब परिचर्या करऽ लेल हमरा बहिन दाइ आबि गेलीह अछि । हम जँ निके भऽ गेलहुँ आ हिनका यश लागि गेलनि तँ सब साल एक चङेरा खाजा, एक चङेरा दू हत्था केरा सहित लड्डू अहाँ केँ चढ़ौतीह आ सबटा हमरा पठा देतीह । हम निकेँ भेलहुँ आ बहिनदाइ हमर कयल कबुला पुराबऽ लगलीह से एखन धरि पुरा रहल छथि । जखन तीन बरख भऽ गेलनि तँ फेर कहलनि- हओ सुफल। हमतँ तोहर कयल कबुला पुरा रहल छियह । आबहुँ हमर कयल कबुला पूरा कऽ दैह ।

हम पुछलियनि - अहाँ की कयलिऐ ? सुफल बाबू हँसैत उत्तर देलनि - हारि दारि कऽ हमहूँ जेठक पूर्णिमाक राति कऽ एक गोटेकेँ संग कयलहुँ । 12 बजे रातिमे दण्ड प्रणाम करैत ६ बजे प्रातः काल पहुँचलहुँ ।

हम पुछलियनि - बहुत कष्ट भेल ? सुफल बाबू बजलाह - कष्ट कोना ने होइत ? मुदा जखन पूरा भऽ गेल तँ एकटा आत्म सन्तोष भेल । हमरा तँ एक्के बेर भोगऽ पड़ल नाम थिक सुफल । मुदा वहिनदाइकेँ ओ कबुला करबाक कुफल एखन धरि भोगऽ पड़ि रहल छनि !

अंग पोछाक खूँट

दू भाइक भैयारी, जेठ राजा साहेब, छोट कुमार साहेब । छलाह तँ सम्पन्न जमीन्दार, मुदा कहबैत छलाह राजा । चास-बास, अमला-फैला शान-गुमान कथूमे कनेको ह्रास नहि । मनहूसी एकेटा बात लऽ कऽ जे दुनू भाइकेँ तीन-तीन टा बियाह मुदा छबो मे पाँच टा बाँझे एकटा काक बन्ध्या । लोक कहैत छैक कौआकेँ एके बेर बच्चा होइत छैक । से एक मात्र रानीकेँ एक बेर मात्र सन्तान भेलनि, विशेषता ई जे जौआँ से दूनू बेटे, मुदा दूनू जन्मी पिल-पिलाह । कते देवेँ सेवेँ दुनूक पालन भेलनि से जे अपना आँखिए देखलक सैह कहि सकैत अछि ।

राजा साहेब आ कुमार साहेबकेँ सन्तानक नाम पर ने केवल ई दू टा, सेहो दूनू भाइ केँ मिलाकऽ, मुदा छओ टा रानी, तनिका लोकनिकेँ चारि-चारि, पाँच-पाँच टा भाय, तनिको सबकेँ दू-दू, तीन-तीन वियाह, तेँ दू सोड़हि सरहोजि, ताहिमे चारि-पाँच गोटे चिलकाउरि रहिते छलथिन । दू टा कऽ सरहोजिकेँ डयौढ़ी पर बिदागरी कराकऽ आनि लेथि, हुनके सभक दूध पीबि-पीबि दुनू बच्चा छओ मासक होइत होइत भोकना बिलाड़ भऽ गेल । बच्चा दुनू पोसाइत रहल आप कऽ आ अपना दुनू भाइकेँ सरहोजि सभक संग ननोरंजन होइत रहलनि आप कऽ ।

राजपाटक बँटवाराक कहिओ कोनो प्रश्ने ने उठल । कुमर साहेब मने-मन गूड़ चाउर फँकैत रहलाह जे अगिला पुस्ततँ सम्पूर्ण राज हमरे बेटाक होयतैक । नि:संतान सौतिन आ देयादिनी लोकनि भने मनेमन कूही होइत रहलथिन, मुदा नक ओहि वेदनाकेँ अपन-अपन कपारक दोष मानि व्यक्त नहि कयलनि ।

जहिना एहि दूनू बच्चाक जन्मसँ पहिने दुनू भाइक भाग्याकाशमे अमावस्या बुझाइत छलनि तहिना जन्मक बाद चन्द्रोदय भऽ गेल रहनि । नेना सबकेँ दू बरख पुरितहिं मुण्डनक समारोहक ओरियान होअऽ लागल । सर सम्बन्धी वर्गमे आनन्दक हिलकोर उठऽ लागल । मुण्डनक नोंत-पाता पबितहि भोजमे विभिन्न पदार्थ परसल जयबाक कल्पने सँ कतेको गोटेक मुँहमे पानि भरऽ लगलनि ओहिना जेना तेतरिक खटमिट्ठी देखला पर भरैत छैक । कुटुम्ब लोकनि विदाइमे एहन धोती, एहन तौनी, एहन अंगा, एहन टोपी आदि पयबाक मनमोदक खाय लगलाह ।

ओ शुभ दिन आबि गेल जहिया मुण्डन छलैक । पाँच सात दिन पहिनेसँ लेयाओन होअऽ लागल । रनिवास सभमे रानी लोकनिक अपन-अपन नैहर सँ आयल बच्चा बुच्ची सहित स्त्रीगण लोकनि गज-गज करऽ लगलथिन । जतऽ अखण्ड शान्ति विराजमान रहैत छल ततऽ नेना भुटका सभक चेँ -भोँ सँ घनघोर अशान्तिक साम्राज्य पसरि गेल । एक दू दिन तँ बड़ बेस, मुदा तकरा बाद सँ सब रानीक चंग उड़ल रहलनि । खाली जनिक बेटाक मुण्डन रहनि तनिका ई कोलाहल विचलित नहि कयलकनि ।

एतेक पैघ भोज लै सामग्री सब तैयार करबा लै अनेक पाकशास्त्र विशारद सब बजाओल गेल छलाह, मुदा सबकेँ निर्देश देबाक दायित्व छलनि स्थायी भनसिया पर । हुनके देख-रेख मे सब भोज्य सामग्री रान्हल बाढ़ल जाइत छल । भनसीया सभक सुपरवाइजरक पद पर नियुक्त भेलाक कारणे स्थायी भनसीया सबकेँ भोजन करा कऽ अन्तमे भोजन करथि तैं राति ११-१२ बाजि जाइनि । फेर भिनसरमे हिनके सबसँ पहिने उठहु पड़नि तेँ सुतबाक काल भिनसरे ठोर तर देबा लै एक जूम तमाकू चुना कऽ अंग पोछांक खूँटमे बान्हि राखि लेथि ।

ई हुलिमाल जहियासँ शुरू भेलैक तहियेसँ भोरमे उठथि तँ अंग पोछाक खूँट फूजल भेटनि । पहिल दिन मनमे भेलनि जे सक्कत कऽ गीरह नहि पड़ल होयत । दोसर दिन फेर ओहिना भेलनि । ओहि दनि गीरहकेँ खूब सक्कत कऽ बन्हलनि, तैयो भोरमे उठलाह तँ पहिने जकाँ खूँट फूजल रहनि । आइ निश्चित भऽ गेलनि जे गीरह अपने नहि फुजैत अछि क्यौ फोलि कऽ तमाकू खा लैत अछि ।

जोर-जोर सँ भोरे हल्ला करऽ लगलाह- हमरा अंगपोछाक खूँटसँ तमाकू के पोलि लैत छी ? बेराबेरी सब भनसीया टहलूकेँ पूछि लेलबाक बाद जखन क्यौ नहि गछलकनि तखन पाहुन सबकेँ पूछ लगलथिन । सब गुम्मी लाधि देलथिन । तखन खिसिया कऽ कहलथिन- जे हमर तमाकू खूँटसँ फोलि कऽ खा लै छी से नहि बाजब तँ आब माइए बहिनिए गरिअयबै, हमरा क्यौ दोख नहि दी ।

एहन स्थिति उत्पन्न भेल देखि बरुआक नाना बाजि उठलथिन- एक जूम तमाकू लै अहाँ एते घिनबै छी । हम भोरे बाह्य भूमि जयबाक काल मात्र एक जूम तमाकू खाइ छी । अहाँ अबेर कऽ सुतै छी तँ अहाँकेँ उठयबामे मात्सर्य होइत अछि । भनसीया बजलाह- एक जूम तमाकूक प्रश्न नहि छैक । अपने तमाकू नहि, बूझल जाओ, हमर दस्ते खा लैत छी । ◆

अलबटही

भगवान जन्म देलथिन मलाह कुलमे । बाप रहैक तड़िपिब्बा मुदा जोगाड़ी लोक । ताड़ी पीबासँ पहिने आ ताड़ीक निसाँ टुटलाक बाद जँ भेट होइत तँ ओकर शिष्टता आ विनम्रता देखि अहाँ मुग्ध भऽ जइतहुँ । एहि गुणक कारणेँ एकरा सुविधासँ जलकर भेटि जाइ । अपने जाल खसाबय, अँटकरसँ माछ मारय जे बासि नहि रहि जाय । थोक मछहट्टा पर अपने बेचि आनय आ खुदरा आङनवाली बूलि कऽ बेचि अनैक । टोला महल्लामे पूर्व जन्मक बिलाड़ मछखौक लोक, जनिका रबिक दिन अथवा एकादशी तिथि सेहो वर्जित नहि रहनि से, माछ किनबा लै एकरे बाट तकैत रहथि । एक तँ माछ भेटै टटका, दोसर देखबा सुनबामे सेहो कलियुगी मत्स्य गंधा रहैक । मलाह जातिये गोर लोक थोड़ संख्यामे होइत छैक ताहिमे सँ एकटा ईहो रहैक । द्वापरक मत्स्य गन्धा जखन पराशर मुनि सन लोकक मन डोला देंने रहनि तखन कलियुगी तथाकथित सन्त लोकनि मोल-मोलाइक लाथेँ .आधा घंटा एकर रूप माधुरीक नयन मुख लूटथि तँ कोन विस्मयक बात ? एकटा लाभ ई होइक जे एक कीलोक बदला डेढ़ कीलो तौलि देल करनि आ से कीनऽ पड़नि । एहि तरहेँ सब माछ सबेर सकाल बेचि घर घूरि आबय ।

टोलमे गोरकी नामसँ विख्यात छलि, मुदा एहि गोरकीकेँ जे एकटा बेटी भेलैक ओकर रंग सालगस्त महुआक पकाओल रोटी सन भेलैक । थोपल-थापल मुँह कान, सतत लेर चुबिते रहैक, लोथे भारी शरीर, तैयो माय तीन मासक भेला पर एकरा कोरामे लेने माछ बेचऽ गेल करैक । नाम राखि देने रहैक अलबटही ।

लोक मायक सुनरताइ देखै आ अलबटही दिस तकैक तँ विधाताक

विधान पर टीका टिप्पणी करऽ लागय-एहन सुन्नरि मायक कोखिमे एहन अलबटाहि बेटी विधाताकेँ कोना देल गेलनि । मुदा ई छौड़ी अलबटाहिए टा नहि रहैक, हड़मुड़ाहि सेहो रहैक । ५ वर्षक भेलि तँ माय मरि गेलैक । बाप एकटा बाँझिन विधवासँ सगाइ कऽ लेलकै । सतमाय जे अयलै से बहरैलैक कैकेयी । अङनेक देयाद मे रहै एकटा पितिआइनि से मन्थरा, तेँ अलबटहीक जीवन अन्हार भऽ गेलै ।

सतमाय माछ बेचऽ जाइ तँ पछोड़ धऽ लैक । बाँझ की जानय परसौतीक पीड़ा । दस-दस गदहाक मारि मारैक । लेर-नोर-पोटा तीनू संग संग पोछि पोन लगा पोछैत चलय, मुदा पछोड़ नहि छौड़ैक ।

कहियो काल हमरो ओहिठाम माछ लेल जाइक तँ एकरे माय आङनमे दऽ जाइनि । एक दू बेर सतमायक संग सेहो आइलि रहय तेँ चीन्हैत रहिऐक ।

एहि वर्गमे तँ बाल-विवाह होइते आयल छैक । अष्टवर्षा भवेद् गौरी मनस्मृतिओक अनुसार कन्यादान जोकर भेलै तँ बाप धूम-धाम सँ एहने अलबटाहकेँ नीक वर-बिदाइ दऽ बियाह करा देलकै आ अपने धराधाम छोड़ि सुरधाम सिधारि गेल । सगही घरवाली सेहो दोसर पुरुषक आश्रय लऽ लेलकै ।

टोला -मुहल्लाक लोक गोरकी आ तकर बेटी अलबटही केँ बिसरि जकाँ गेल रहैक । दस बरखक बाद एकाएक बरख दिनक एकटा नेनाकेँ कोरामे लेने एकटा युवतीकेँ बाजारसँ तरकारी कीनि कऽ घुरलापर आङनक ओसारा पर बैसल देखलिऐ । कने ठेकनाबऽ लगालिऐ तँ कहलक परनाम चच्चा चिन्हली ? नीति वाक्य छैक- 'प्राप्ते तु षोड़शे वर्षे गर्दभी चाप्सरायते' अर्थात् सोड़ह वर्षक भेलापर गदहीओ मे सौन्दर्य निखरि जाइत छैक । हमरा ठेकनबैत देखि बाजि उठलि -नहिराक सब लोक हमरा भूलि गेल एक गो चाची के छोड़ के, महज हम नहिराकेँ केना भुलितिऐ । आङनसँ कहलनि - नहि चिन्हलिऐ ? अलबटही थिकै ।

विस्मित होइत पुछलिये– कोना छेँ, कतऽ रहै छें, एतेक दिन पर हम सब कोना मन पड़लिऔ ?

अलबटही अपन खेड़हा सुनाबऽ लागलि - जेतना गोके ई छौंड़ा ऐछ तेतने बड़ से हम माय के जओरे आबी । बाबू बियाह करा के ससुरारि बिदा कऽ देलक आ अपने मरि गेल । माय पहिने मरि गेल रहय । नैहरा से एकं गो कार

कौआ घूर कऽ देखै ला नइ गेल चच्चा । मरदाबा न कमाइ हय न खटाइ हय, रात दिन ताड़ी गाँजा पी के बुत्त रहैयऽ । हमही कुच्छो कुच्छो बेपार कऽ लौली ताही से खरची चलाबी । अइ छौंड़ा के जनममे तऽ बुझू चच्चा अपने मर गेल रही । तीन महीना सेज धेले रहली । कुइछ हुब्बा भेल तऽ हाथ गोड़ चलाबे लगली । एक दिना चच्चा ! ठक सनी उपास पड़ गेली । मरदाबा ताड़ी पीले आयल आ खाय मङलक । घरमे कुच्छो रहे तबने दितिऐ । हम बोललिये - की कमाके रख गेल छला गऽ जे हम रान्ह के रखले रहतीयो ? एतनी गो बात पर छौंड़ाकेँ गोदीसे छीन के उठा के पटक देलकै आ हमरा मार लात से मार लात से गेन बना देलक चच्चा । आइन लग गेल । हीयाँ घड़ारी मे डेढ़ कट्ठा हमरो बाबू के हइ । सोचली नैहरा चल जाइ । अपने कमायल हींओ खाइ छी, हूँऽओ खायब । हीयाँ रहब तऽ ई रच्छछबा लड़िका के मार के फेक देत । भगवान दू गो हाथ गोड़ दू गो आँख कान देले छथ जहीं रहब, कमा के खा लेब । से चल एली । हीयाँ दियाद आउर नाक पर माँछी बैठइ ने दैत छल गऽ । तखनी खुच्चो मीसर के पकड़ली । बीस हजारमे हुनकरा हाथे घरारी बेचके चाउर के बेपार करे लगली गऽ । कखनीओ निरमल्ली, कखनीओ जलेगर (जयनगर) खाहे रीगा चल जाइ छिकी । हुँए सबसे चाउर लौली, नफ्फा जे होइयऽ ताही से गुजारा करै छिकी । हम जे अइली चच्चा ! से आस लगा के जे अहाँ चाउर तऽ बजारे से खरीद के खाइते छीकी । जा के लाबे पड़ैयऽ । हम घर पहुँचा देत्र । रिक्शावाला के दस गो रुपैया दैत होबै से एही अलबटही बेटा के दे देल करबै । आ जैसन चाउर उसना चाहे अरबा, मोटका चाहे गमकौआ, मेहिक्का, जैसन चाहब तैसन हम जुमा देब ।

पुछलिऐ - निर्मली, जयनगर आदि ठाम जा कऽ चाउर अनैत छेँ से उधार दैत छौ ? बाजलि- उधार केना देतै ?

कहलिऐ - उधार नहि दैत छौक तँ ओतेक ओतेक नगद टाका संग लऽ जाइ छें तँ क्यो छीनि - झपटि नहि लैत छौ ?

अलवटही बाजल– कोनो आङी चाहे कोँचामे थोड़े रखै छियै जे...

तखन ?

ई छौंड़ा जइ केथरी नूआँमे हगले मुतले रहइ हय ओही गन्हाइत नूआँ मे बान्ह के कहूँ फेक दै छिऐ, कोइ छूबितो न हय । ◆

बटुआ

आइ सब काज छोड़ि भुटकुन भाइसँ भेट करबाक समय बाहर कयल । कतेक दिन पर एहि बेर भुटकुन भाइ सपरिकऽ सपरिवार गाम अयलाह अछि । अयलाँ सात दिन भऽ गेलनि । हम तेहन चमर छोँच मे पड़ि गेल छी जे भुटकुन भाइ सन आप्त लङौटिया मित्रसँ एतेक दिन धरि भेट करऽ नहि आबि सकलियनि । मनमे लाजो होइत छल जे हमरा बारेमे भुटकुन भाइ की सोचैत होयताह । छथि ने लङौटिया मुदा कमौआ छथि, नगरमे रहैत छथि, साफ-सुथरा ओढ़निहार-पहिरनिहार लोक, बेर-कुबेरपर बातसँ, बिचारसँ, बेगरता पड़ि गेला पर टाका-पैसासँ सेहो सहारा देनिहार छथि । छथि ने लङोटिया मुदा वयसोमे चारि छओ मास जेठे छथि । तेँ ओ आबथि हमरा ओतऽ पहिने से उचित होयत ? हम सब देहाती माँटिये-पानिमे खटनिहार लेढ़निहार, भुटकुन भाइ सन उज्जर धप-धप बगुलाक पाँखि सन सजाओल धोती, कलफदार अंगा पहिरब से ने पार लागत आ ने छजत । तैयो मैल-चिकाटि गोल गला गंजी आ अङपोछाकेँ गरम पानिमे दऽ कऽ साफ कयलहुँ । एक तरहेँ बूझू जे आजुक दिन भुटकुन भाइक नाम पर निहुँछि देने छलियनि ।

बेरू पहर बड़दकेँ पानि पिआ कऽ दू आहुल घास ओगारि देलिऐक आ सीटीमार एक पात तमाकूक ऐँठा बना कऽ भुटकुन भाइक लेल सेहो संग लऽ लेलियनि । ओ पुवारि टोल, आ हम पछबारि टोल तेँ दुनू गोटेक वास कने दूर पड़ैत अछि । पहर दिन अछैत हम पहुँचलहुँ भुटकुन भाइक दलान पर । दलान सुन्न छलनि । ओना दलानक चौकी पर कम्मल सतरंजी ताहि पर चकचक करैत चद्दरि ओछाओल छलैक । मखमलक खोल लागल एकटा गेडुआ सेहो छलैक । एहन लगैत रहैक जेना एहि ओछाओन परसँ लोटपोट कऽ क्यौ एखने उठल

होइक । कोनो टेल्ह तेल्ह सेहो नहि रहैक जकरा किछु पुछितिऐक, मुदा आङनमे किछु त्वंचाहंच, उतराचौरी होइत छलैक सेहो तते जोरसँ जे दलान पर नीक जकाँ सुनि पड़ैत छलैक ।

हम दलान पर बैसि स्वरकेँ अकानऽ लगलहुँ । एकटा स्वर भुटकुन भाइक आ दोसर भौजीक बूझि पड़ल । एकटा वाक्य कानमे स्पष्ट रूपेँ आयल, भौजी कहि रहल छलथिन जाहिमे हमरो नाम लेल गेल, वाक्य रहैक– से आब बूलन बाबूक ओतऽ जाइ अथवा घूरन बाबूक ओतऽ हम बटुआ संग नहि लऽ जाय देब । जत्तहि जाइछी ततहि किछु ने किछु बिसरिए अबैत छी आ दोख हमरा माथ पर थोपि देल करै छी । अपन नाम सुनि हमर कान ठाढ़ भऽ गेल। अकानि कऽ हम सुनऽ लगलहुँ ।

भुटकुन भाइ कहलथिन– बिसरि आयब हम अपने आ अहाँकेँ दोख किए लगायब ।

ताहिपर भौजीक कहब छलनि - अहाँ हजार दिन कहने होयब जे जखन जनै छी जे हम बिसरभोर भऽ गेलहुँ अछि तँ हमरा कोनो वस्तु संग किए लऽ जाय दै छी ।

भुटकुन भाइ– बटुआ वस्तु भेलै ?

भौजी-वस्तु नहि भेलै तँ की भेलै ? ओहि बेर नमरी जे तीन टा कतहु गमा अयलहुँ से बटुएमे ने रखने रही ? बटुआ कतऽ बिसरि आयल रही ?

भुटकुन भाइ– से तँ बुझलहुँ, मुदा बटुआ जे रखैत छी से तँ एही द्वारेँ जे एहिमे चुन तमाकू एक खोलमे, सरौता सुपारी दोसर खोलमे आ किछु बेर-कुबेर लै पाइ कौड़ी तेसर खोलमे राखि लैत छी ।

भौजी– एखन धरि तीन टा सरौता हेड़ौलहुँ अछि आ चुनौटी तँ कैक गंडा-गाही पूरि गेल होयत ।

भुटकुन भाइ– तमाकूक अमल केहन होइ छै से अहाँ कोना बुझबै ? खाइत रहितहुँ तखन बुझितिऐक । तेँ अपना ओहि ठाम लोक तमाकूकेँ तमाकुल कहैत छै । तम माने अन्धकार आ अन्हारमे जेना मन आकुल भऽ जाइछै तहिना एकर अमल अयला पर आरो तेज भऽ जाइ छैक । आइ अयलाँ सात दिन भऽ गेल, बूलनकेँ ई खबरि अवश्य भऽ गेल होयतनि, मुदा नहि आबि सकलाह

अछि तकर माने कोनो ओझराहटिये पड़ि गेल छथि । हमही जा कऽ भेट कऽ अयबनि ताहिसँ हमर अमला तँ ओछ नहि भऽ जायत । घर कने दूर छनि तँ अपन बटुआ संग रहत तँ ठीक रहत ।

भौजी कहलथिन - अपनहि ने कहने रही जे कोनो वस्तु संग किए लऽ जाय दै छी, तेँ हम बटुआ नहि लऽ जाय देब । भुटकुन भाइ ई कहैत जे हँऽ बटुआकेँ गोसाउनिक पीड़ी लग राखि दुनू साँझ ओकरा धूप-दीप देखा देल करियौ, भुटकुन बिदा भेलाह बूलनसँ भेट करय । बाहर अबैत छथि तँ हमरा बैसल देखि कूदि उठलाह- आ रौ लङटाबा ! ई दलान पर कान पथने सबटा सुनैत बैसल अछि ।

हम कहलियनि- भुटकुन भाइ ! अहाँ मने बिसरभोर भऽ गेल होइ, मुदा हमरा एकर हर्ष अछि जे हमरा नहि बिसरलहुँ अछि । ◆

कचोट

मङनू बाबू एक विपन्न परिवारक होइतो विद्यार्थिए जीवनसँ संघर्ष करैत चिररोगी पिताक देखभाल, औखदबाड़ी पथ्यपानिक व्यवस्था करैत खानगी विद्यार्थी सबकेँ ट्यूशन पढ़ा अपनहुँ पढ़थि आ छोट भायकेँ सेहो पढ़ाबथि, परिवारो चलबथि, छोटसन गृहस्थी रहनि तकरो व्यवस्था करथि तैयो कोनो परीक्षा द्वितीय श्रेणीमे नहि उत्तीर्ण भेलाह ।

अड़ोस पड़ोसमे जे जरनियाह लोक रहनि तकरा सबकेँ हिनकर उन्नति देखि कऽ कोँढ़ दुखाइत रहैक । नीति मे कहल जे उद्योगी पुरुष-सिंहक लग लक्ष्मी अपने चल जाइत छथिन आ काहिल लोक भाग्यक भरोसेँ बैसल बाट तकिते रहि जाइत अछि । ई नीतिवाक्य मङनूबाबूकेँ सतत उत्प्रेरित करैत रहनि । दुर्जन सब किछु बिगाड़ि नहि पबनि, मुदा जखन कखनहुँ अवसर भेटि जाइक कोनो कटाह बात कहबासँ नहि चुकनि । तथापि मङनू बाबू नीति वाक्य सभक अनुपालन करबामे कतहु पछुआथि नहि ।

उच्च शिक्षा धरि नहि पहुँचि सकल छलाह ताही बीचमे पिताक देहान्त भऽ गेलनि । विवश भऽ बी.ए. पास कऽ नौकरीक खोजमे घरसँ विदा भेलाह। ताहि दिन ई जे एकटा लोकोक्ति छैक – मीयाँक दौड़ मस्जिद धरि से ताहि दिन मिथिलाक लोकक दौड़ कोलकाता धरि होइक । गामक अनेक व्यक्ति कोलकातामे रहथिन, मुदा छोट-छोट काज करैत । क्यौ ट्राममे ड्राइवरी तँ क्यो कोनो मीलमे मजदूरी, क्यौ क्यौ अनुष्ठान करैत । मङनूबाबू एक अनुष्ठानीक पता ठेकाना लऽ कोलकाता बिदा भऽ गेलाह । मनमे ठानि लेने छलाह जे ऐंठ धोअब छोड़ि और जे कोनो काज भेंटि जायत से करब, मुदा बिनु किछु अर्जन कयने गाम नहि घूरब । अपन छात्रावस्थामे गामसँ मधुबनी धरि बहरायल रहथि । सुनथिन जे कोलकाता अग्गह सँ विग्गह महानगर छैक । गामसँ दरभंगा धरि चल जायब ततेक दूरधरि कलकत्ते कहबैत छैक । एतेक टा विशाल नगरमे अपन चिन्हार लोकक पता रहितो ओहि स्थान धरि पहुँचि पायब पोखरिसँ मुट्ठी मे माछ पकड़ि आनब

सन कठिन होयत, तथापि चलि पड़लाह । यात्रा शुभ लग्नमे कयने छलाह । मनमे जेहन आशंका छलनि तेहन कोनो बेसी कठिनता नहि भेलनि । पुछैत-पुछैत गन्तव्य स्थान धरि पहुँचि गेलाह । गौआँ एकटा मन्दिर पर पुजेगरीक काज करैत छलथिन ।

परदेशमे जँ अपन गामघरक लोकसँ अकस्मात भेट भऽ जाइक तँ मन आह्लादित भऽ जाइत छैक । परदेशमे रहलाक कारणेँ गाम घरक छल-छद्म लोककेँ बेसी प्रभावित नहि करैत छैक । ताहूमे गौआँ योगीझा पूजा पाठ कयनिहार आस्तिक लोक रहथिन । मङनूबाबूकेँ अकस्मात देखि स्नेहपूर्वक स्वागत कयलथिन । कुशलक्षेम पुछलथिन, गाम घरक हाल-चाल, टोल पड़ोसक हित अपेक्षितक कुशल समाचारक जिज्ञासा कयलथिन । चढ़ौआ मे फल मूल जे छलनि से जलखै करौलथिन । मन्दिर रहनि कालीक, मन्दिर छोटे सन रहैक, मुदा साँझक आरतीमे बेस लोक जुटैत छलैक ।

मन्दिरक पछुआड़मे एकटा भव्य भवन रहैक । भवन तँ रहैक भव्य, मुदा ओकर शोभा क्षीण भेल जा रहल छलैक । दुर्भाग्यक घन-घटा सुख-शान्तिकेँ आच्छादित कऽ देने रहैक । ओहि भवनक स्वामी एक जहाजी व्यापारी रहथि जनिकर जहाज लंका, मलेशिया, जापान आदि देश सामान लऽ जाइनि आ ओहि देशसँ सामान आनल करनि । सब कारवार मैनेजर मजदूर सब सैह करैत रहनि । एकबेर अपनहुँ इच्छा भेलनि जे विदेशक यात्रा करी । ओहि बेरक यात्रामे दुर्योग एहन भेलनि जे जहाज जखन बीच समुद्रमे रहनि तखने समुद्री भयंकर बिहाड़ि अयलैक आ बीचे समुद्रमे जहाज चप्प दऽ डूबि गेलैक । जहाजमे चढ़ल एको व्यक्ति नहि बाँचि सकल । चटर्जी महाशयक टीपनिमे जे जलसमाधि लिखल छलनि तकरा क्यौ नहि टारि सकलनि ।

हुनक एकमात्र पत्नी दुर्भाग्यक मारि खाइत आब पहचतरिम वर्ष पूराकऽ रहल छलथिन । ओ वैधव्य जीवन बितबैत एहि तारा मन्दिर पर दुनू साँझ आरतीक बेरे मे निश्चित रूपेँ आयल करथि । मङनू बाबू ओहि दिनक पहिले पहिल आरती देखलनि । भाव विभोर भऽ न मन्त्रं नो यन्त्रं स्तोत्रकेँ रेघारेघा कऽ गाबऽ लगलाह । आन दर्शनार्थी सब धीरे-धीरे निकसैत गेल, मुदा मङनू बाबूकेँ मधुर स्वरमे स्तोत्र पाठ करैत देखि बूढ़ी ध्यान मग्न भऽ सुनैत रहलीह । स्तोत्र पाठ समाप्त भेलाक बाद जखन मन्दिर परसँ उतरऽलगलीह तँ भावनामे मग्न रहलाक कारणेँ पैर चुकि गेलनि, मुँहे भरेँ ततेक जोरसँ खसलीह जे नाकमे भयंकर चोट लगबे कयलनि दूनू नाकसँ छर छर शोणित बहऽ लगलनि । मङनू

बाबू दौड़ि कऽ गेलाह, पाँज मे समेटि कऽ उठौलथिन, मुदा पैर मे तेना मचोड़ पड़ि गेल रहनि जे अपना पैर पर ठाढ़ नहि भेल होइनि । अचेत भऽ गेल छलीह । अन्ततः उठा पठाकऽ अस्पताल लऽ गेलथिन । ओतऽ भर्ती कऽ लेलकनि । आब हिनका एकसर छोड़ि मङनू बाबू कोना चल आबथु । अर्द्ध अचेतावस्थासँ उपचार भेलाक बाद जखन बूढ़ी पूर्ण चेतनामे अइलीह आ एहि अपरिचित केँ अपना लग बैसल देखलनि तँ करुणार्द्र भऽ गेलीह । यैह करुणाक भाव मङनूबाबूक सौभाग्यक पट जेना फोलि देलकनि । बूढ़ी परिचय पुछलथिन- कतऽ घर अछि । की नाम थीक ? एतऽ की करैत छी ? मङनूबाबू अपन स्थितिक वर्णन करैत कहलथिन- हम आइए गामसँ पहिले पहल कलकत्ता अयलहुँ अछि । मन्दिरक पुजेगरी हमर गौआँ थिकाह । हिनके ठेकाना पता पर एतऽ पहुँचलहुँ अछि । कतहु कोनो जीविकाक खोज करब ।

बूढ़ी कहलथिन- मनुष्यताक सम्बन्धसँ अहाँ हमर एतेक सेवा कयलहुँ अछि । हमरा क्यौ ने अछि । अहाँ हमर बेटा भऽ कऽ रहब ? अहाँसँ हम सब दिन स्तोत्र पाठ सुनब । छोट छिन जे टहल टिकोरा होयत से अहाँसँ करायब । एहि घोर कलिकालमे एक अपरिचित वृद्धाक एहि तरहेँ सहायता करब हमरा असाधारण बात बुझाइत अछि । मन्दिर परसँ हमरा अस्पताल कोना अनलहुँ ? अस्पताल अहाँकेँ कोना देखल भेल ?

मङनूबाबू उत्तर देलथिन - हम तँ एकदम अनभुआर लोक छी, अहाँकेँ अचेत देखि पुजेगरीजी एकटा टेक्सीवलाकेँ बंगला भाषामे किछु कहलथिन आ ओ टैक्सीवाला अहाँकेँ एतऽ पहुँचा देलक । दस रूपैया मङलक, मुदा हमरा लग साते टा टाका छल, कहला पर मानि गेल ।

तीन दिनक बाद बूढ़ीकेँ अस्पतालसँ छोड़ि देलकनि । तखने मङनूबाबू घुरि कऽ मन्दिर पर अयलाह । देखलनि बूढ़िक मकान तँ मन्दिरक पछुआड़े मे छनि । गौआँ पुजेगरीकेँ सब वृत्तान्त सुना देलथिन । पुजेगरी विचार देलथिन जे तत्काल कलकत्तामे पैर रोपबाक जगह भेटि गेल अछि तँ चल जाउ । भविष्यमे अनुकूल स्थिति रहल तँ बेस, नहि तँ देखल जयतैक ।

बूढ़ीकेँ धर्मक बेटा भेटि गेलथिन । मङनूबाबूकेँ धर्मक माय । आब तँ बूढ़ीकेँ मुइना पचीसो बरख भऽ गेलनि । ओहि भव्य मकानक मालिक मङनूबाबू छथि । पुजेगरीकेँ एकर कचोट छनि जे एतेक दिनसँ एहि ठाम छी, पहिने बुझितिऐक तखन तँ हमही एकर मालिक भेल रहितहुँ । ◆

माइएक उपनयन

प्रोफेसर साहेब तीन भाय । जेठ छोट दुनू प्रोफेसर माँझिल गृहस्थ । दू गोटेकेँ नगदी आमदनी, एक गोटेकेँ खेती बाड़ीसँ अन्न आदि । जेठ आ छोट मनहिमन बुझैत जे खेत-पथारसँ भेल उपजाबाड़ीसँ सुभ्यस्त रहैत छथि माँझिल बुझैत जे हमरा रौदमे चानि धिपाबऽ पड़ैत अछि तँ वर्षा-बिहाड़िओमे थाल खीचमे लेढ़ाय पड़ैत अछि । संगहि कखनो रौदी कखनो दाही भऽ गेला पर हाथ मलैत रहि जाय पड़ैत अछि । हुनका सबकेँ बारहो मास बसन्ते रहैत छनि । नीक-निकुत खाइत छथि, साफ-सुथरा पहिरैत छथि । हम कमतिया जकाँ खटैत छी, अपना चासमे भेल मडुआ, मकइ, कुर्थी, खेसाड़ी धरि खाकऽ काल कटैत छी । हम कहियो हिसाब माङऽ नहि जाइत छियनि । ओ लोकनि आङो-समाङ भेला पर बिनु हाथ पसारने एक पाइ नहि दैत छथि, तैयो हिसाब माङऽ अबैत छथि ।

मुदा एहि अन्तर्विरोधकेँ तीनू भायमे क्यो गोटे व्यक्त नहि करथि, मनहि मन एक दोसर पर कुड़बुड़ाइत रहथि । जेठजनकेँ दू बेटी पर तीन बेटा, माँझिलकेँ दू बेटा पर एक बेटी आ छोट केँ दू टा बेटे । भैयारीमे जे सबसँ जेठ तनिकर बेटा सबसँ छोट, एखनहुँ मायक दूध पिबैत । माँझिलक जेठका बेटा 15 बरख पर पहुँचल । उपनयन आब अनिवार्य, नहि तँ व्रात्यदोष लगबाक संभावना । तेँ जेठ भाय लग उपनयनक प्रस्ताव लऽ पहुँचलाह । छोटो भायकेँ बजौलनि । तीनू भायमे विचार स्थिर भेलनि जे बेराबेरी उपनयन कयने अनेरे अनेक बेर झंझट करऽ पड़त, तेँ सातो भायक उपनयन कऽ देल जाय आ एके बेरमे तेहन भारीभोज, तेहन नाच-गान तेहन मड़बाक सजावटि कयल जाय जेहन गाममे आइधरि क्यौ नहि कयने होथि ।

विचार स्थिर भऽ गेलनि । उपनयनक तैयारी शुरू भऽ गेल । माङनिखबास सन विख्यात गबैया । दरबारी दास सन प्रख्यात नटुआ, तकर अलावे नौटंकी पार्टी, ढोल-पिपही तँ रहबे करत बैण्डपार्टी सेहो मङाओल जाय । गामे किएक, परोपट्टामे एहन थइ थइ नहि भेल हो, बाबू साहेबो लोकनिक कान काटि लियनि तेहन संरजाम जुटयबामे लागि जाइत गेलाह ।

तीनटा बहिन, दूटा पीसी, पाँचटा मौसी, सात भाय माम, सातो वरुआक तीन गाम मातृक, तीनूकेँ मिलाकऽ एगारह माम छओटा मौसी, छओटा मौसा सब मिलाकऽ सात बटालिअन कुटुंब वर्ग, ताहि परसँ दुनू प्रोफेसरक इष्ट-मित्र जाहिमे तीन चारि गोटे कवि सेहो, तेँ दू चारि आरो कवि आमन्त्रित भेलाह जे एकटा कवि सम्मेलनो भऽ जाय । जे क्यो ने कयने अछि से कऽ कऽ देखा देल जाय जाहिसँ अगिला कम सँ कम पचीस-पचास वरख धरि लोक-चर्चामे बनल रहय। भेवो कयल सैह ।

सात टा वरुआ तेँ सात तिया एकैस हाथ, डेढ़ एमहर, डेढ़ ओमहर जगह देल जाय अर्थात् एकैसतीन चौबीस हाथ नाम आ सात हाथ चाकर मँड़बा, बंसकट्टीए दिनसँ दाइ-माइक झोंटमे कर्पूर देल नारियलक सुच्चा तेल पड़ऽ लगलनि । ओतेक टा मड़बा आङनमे कोना अँटितनि तेँ दलानक अङनैमे बनल आ चारू कातसँ पर्दा लै कनातक ब्योँत भेल । गबैया सब लै फराक, नौटंकी बाला लै फराक, रशन चौकी बाला लै फराक मंच सब बनाओले गेल, पाहुन पड़ककेँ अँटकबा लै टेंट सब खसल । भानसभात लै चनवा टङायल, नटुआक नाचऽ लै शामियाना ठाढ़ भेल । दू टा सँ काज नहि चलनिहार तेँ तीनटा जेनरेटर ठीक कयल गेल । बिजली बत्तीसँ टोल भरिक गली कूची सब जगमगा उठल । देखिते-देखिते दू-चारि दिन लै गाम छुटल शहर बनि गेल ।

सात बरुआक सातटा आचार्य, सातटा पुरोहित सात चौके अट्ठाइसटा ब्रह्मा, केश कटनिहार सात नौआ, विलौकी माङऽलै सात टा पालकी, तकर सात चौके अट्ठाइसटा कहार, ढोलिया-बजनियाँ, पौनी पसारी सोनार कमार कुम्हार, डोम, केश लेनिहारि, कुम्हैनि सभक वस्त्र धोती साड़ी आदि आदि । सातो बरुआक लत्ता कपड़ा, अलंकरण, जुत्ता-पैताबा । एतेक सामान थोकमे किनबाले एक जीप मुजफ्फरपुर गेल ।

उद्योगक दिनसँ गामक धीया-पूता पीह-पाह करऽ लागल । भोजमे

खौकार लोक सब चारि दिन पहिनहिसँ मनमोदक खाय लगलाह । जमाइनि फाँकि फाँकि कोष्ठ शुद्ध करबामे लागि गेलाह ।

अन्ततः ओहो दिन आबि तुलायल । कुमरमक भोज दिन प्रोफेसर साहेबक नामक डंका बाजि गेलनि । भात-दालि, बड़-बड़ीक संग दूटा तरकारी आइ धरि कतहुने परसल गेल छलैक । दही-चिन्नी आ सकड़ौरीसँ भोज खयनिहारकेँ तोपि देल गेल छलनि । स्त्रीगण वर्गक हेतु सबकेँ अढ़िया बाटी आनऽ कहि देल गेल छलैक तेँ ने पातपर लोक बेसी छुतौलक आ ने पात समटि अंगपोछामे बान्हि कऽ लऽ जाय पड़लैक । भोजन कऽ लोक उठल, पान सुपारी लऽ अपन-अपन भोज्य सामग्री भरल अढ़िया लेने अपन-अपन आङन चल गेल ।

उपनयनक दिन तँ टोलभरिमे लाउडस्पीकर अनघोल मचौने रहलै । काजोक गप्प करबामे लोककेँ तते चिचिआय पड़ैक जे कते गोटेक कण्ठ फाटि गेलैक ।

मातृभिक्षाक बेरमे सातम बरुआक भीख आचार्य अपने झोरा उठाकऽ लेबऽ लगलथिन तँ ठकदरुआ कोनो कुटुम्ब पूछि देलथिन- बरुआ कहाँ गेल ?

आचार्य कहि उठलथिन- नेना छै ने, मायक दूध पीबऽ गेलैक अछि ।

कुटुम्ब हँसैत कहलथिन- प्रोफेसर साहेब बरुआक माइएक उपनयन किएक ने करा दैत छथिन जाहिसँ जे जनमतनि तकर उपनयन भेले रहतै । ◆

से की हम बुड़िवक छी

ताहि दिनुक धनाढ्य लोकक मनोरंजनक ढंग किछु अद्‌भुते छलनि । महन्थ स्थान सबमे भगवानक नाम पर पर्याप्त सम्पत्ति रहैत छलनि जकर भोक्ता माने मालिक महन्थजी सभक प्रणम्य ।

महन्थान दस-पाँच बैरागी बाबाजीक तथा अतिथि सभ्यागतक शरण स्थल होइत छल । गुणी, गायक, पहलवान, गरीब-गुरबाक यथासंभव भरण पोषण करैत छल ।

मनोरंजन लै कखनहु कोनो भोजनभट्टकेँ आम कखनहु, कटहर, कखनहु केरा खयबा लै, कखनहु कुसियारक रस तँ कखनहु भाङ पीबा लै आमन्त्रित करय, कहिओ परोपट्टाक कीर्त्तनियाँ मण्डलीकेँ बजबाय अष्टयाम आ नट समुदाय आबि जखन डेरा खसाबय तँ नीक गौनिहार नटसँ आल्हा सुनबाक आयोजन करय ।

महन्थजीकेँ अपन पुरोहितसँ ज्ञात भेलनि जे हुनकर एक समधि छथिन से जेहने भङेड तेहने खाधुर छथिन ओ अपन बेटीकेँ देखबा लै आयल छथिन।

महन्थजी दोसरे दिन हुनका भाङ पीबा लै आ दही, चूड़ा, केरा, गुड़ खयबा लै आमन्त्रित कयलथिन । समधि नोतक नाम सुनि चपचपा गेलाह । अपन बेटीकेँ कहलनि– आइ राति हल्लुके भोजन करब, जे किछु छन्नर-मन्नर से काल्हि नहि परसूए । काल्हि स्थान पर नोंत भऽ गेल अछि । मनहि मन भोज्य पदार्थ सभक कल्पना करऽ लगलाह– महन्थजीक स्थान पर जखन आग्रह पूर्वक नोंत आयल अछि तँ हरही सुरही धानक चूड़ा कथमपि नहि भऽ सकैत छैक, की सतरिया होइ वा करायि कामांद वा मालभोग अथवा तुलसी फूल

धानेक होयतैक । अपना बथान परक महीसक गाढ़ कऽ औंटल दूधक दही, मसाला देल गूड़क भेली । कतबो खयबै, घटतै तँ नहिएँ । आखिर स्थान थिकै ने, सब किछु भगवानक प्रसादे । सान्ध्य बूटी–जमि कऽ भेलै छलनि, मन आनन्द सागरमे हेलऽ लगलनि । प्रात होयबाक उत्कट प्रतीक्षा करैत राति कटि गेलनि ।

महन्थजी एगारह बजेक समय देने छलथिन । पाँच मिनट पहिनहि पहुँचि गेलाह । समधि संग छलथिन । भगवानकेँ भोग लगा कऽ पट फुजले छलनि । पुरोहित सब सिखा देने छलथिन– स्थान पर गेलाक बाद पोखरिक घाट पर पैर धो पहिने ठेहुन मोड़ि माटि पर माथ सटा भगवानकेँ गोड़ लागि, मसनद लगा बैसल महन्थजीकेँ झुकि कऽ दण्डवत कहि जाधरि बेसय नहि कहथि ता धरि ठाढ़ रहब । समधि अपन समधिक कहल वचनक अक्षरशः पालन कयलथिन ।

दण्डवत उत्तरमे महन्थजी पूछि बैसलथिन– सुनलहुँ अहाँ भाङ पचयबामे बेजोड़ छी । एखन धरि कतेक भाङ खयने पीने होयब ?

'सरकार, भाङ कते खयने वा पीने होयब तकर लेखा तँ नहि कयने छी, मुदा एखन धरि तीन टा सिलौट भाङ पीसैत खिया कऽ फूटि गेल अछि, चारिम अघिआयल अछि ।

उत्तर सुनि महन्थ जी पुनः पुछलथिन– तैयो साल भरि लै जमा कऽ रखैत तँ होयब ।

'जी सरकार !'

'से कतेक ? अन्दाजन ?'

समधि सकपकाइत कहलथिन– सरकारकेँ सय दू सय बीघा जिरात अछि तेँ धान, गहुम, राहड़ि बदाम आदि अन्न राखऽ लै बखारी बन्हने छी । हम दरिद्र ब्राह्मण भाङ राखऽ लै ढक बनबा लेने छी । ढक केर डेढ़ हाथ पेट छै आ साढ़े चारि हाथ उँचाइ । ओहिमे कसिकऽ भरि दैत छियै, साल लागि जाइत अछि ।

महन्थजी फेर पुछलथिन– ओतेक भाङ जोगाबऽ लै कतेक खेतमे एकर खेती करैत छी ?

'से की हम बुड़िबक छी जे भाङ उपजाबऽ लै अप खेत अजबाड़ब ?

'तखन कोना ?'

'सरकार, भाङकेँ भिजा कऽ जखन-जखन धोइ छिऐ, सबटा बीजकेँ ओरिया कऽ राखि लै छी आ जखन गौआँ लोकनि... सरकार, ई बात कतहु बजबै नहि, आन ठाम तँ फूसि बाजिए लै छी, नुदा एहि ठाम भगवानक मन्दिर पर अपने सन संत महंथ लग फूसि कोना बाजू ।

महन्थजी– कतहु नहि बजबै, अहाँ कहू ।

सरकार, जखन गौआँ लोकनि गहूम बाओग कऽ लैत छथि आ बीत भरिक गाछ भऽ जाइ छै तँ राखल बीज ओही खेत सबमे छिड़िया दै छिऐ । गहूमक कटनीसँ पहिनहि गोटबा गोटबी उपाड़ि अनैत छी । भाङ के भाङ भेल, बरिसात लै किछु जारनि सेहो भऽ जाइत अछि ।' ◆

गल्पक प्रपौत्र

1. भूजा

जलखैमे भूजा हमरा सब दिनसँ अतिशय प्रिय रहल अछि । एक दिन भुजा फँकैत काल भूजा शब्दक अर्थ दिस ध्यान चल गेल । एकाएक एक टा अर्थ बिजली जकाँ माथमे चमकि उठल – भू माने पृथ्वी, ताहिसँ जा अर्थात् जन्म लेने छथि जे अर्थात् सीता । तुरन्त दूनू पैर मोड़ि, ठेहुन भरेँ बैसि, भूमिमे माथ सटा भूजाकेँ प्रणाम कयल आ गुरुजीकेँ जा कऽ कहि देलियनि– अपने नहि बुझबैक, संस्कृतक बात थिकै । ◆

2. हंडी आ कोहा

संस्कृत छात्रावासमे रहनिहार छात्र लोकनि स्वयंपाकी होइत छलाह । सात गोटे मिलिकऽ भानस करथि । एक दिन सप्ताहमे सभक पार अबैत छलनि जे रान्हि–बाढ़ि कऽ सबकेँ खोआ देथिन । ओहि दिन व्याकरण–साहित्य–न्यायाचार्य आ वेदान्ताचार्यक परीक्षार्थी जयकान्तजीक पार रहनि । दुर्योगवश दालिक बट्टुकक पेने मे ओहि दिन भूर भऽ गेलैक । तत्काल निर्वाह लेल डेढ़ आनामे माँटिक कोहा कीनि कऽ आनल गेल । जयकान्तजी दुचुल्हिया पजारलनि । अगिला पर भातक हण्डी आ पछिला पर दालिक कोहा चढ़ौलनि । भातक अदहन देलथिन, मुदा कोहामे अदहन देब बिसरि गेलनि । कनेक काल आँच लगलापर कोहाक पेन चटकि गेलैक तँ चट दऽ शब्द भेलैक । मुदा जयकान्तजी एक सहयोगीकेँ बजा कऽ कहलथिन– अगिला चुल्हा पर ससुर हंडीकेँ देखि कऽ नव आइलि कोहा बहुरिया थपड़ी बजौलनि अछि । देखियनु की कहैत छथि ।

सहयोगी कोहाक झापन हटा कऽ देखलनि दालिक अदहनक बदला चुलहाक धधरा भूर बाटेँ कोहामे लपटि रहल छलनि । ◆

3. बौआक बापकेँ

अनन्तलाल पटवारीक पत्नी अनन्त पूजा करऽ बैसलथिन । गामक पुरोहित पद्धति लऽ पूजा करा रहल छलथिन । अन्तमे पूजित अनन्त सबकेँ दूधक लोटामे दऽ समुद्र मन्थन करऽ कहलथिन । पटवारिन हाथ दऽ कऽ लोटामे हँथोड़ऽ लगलीह । पुरोहित प्रश्न करैत पुछलथिन – की मथै छी ? उत्तरमे क्षीर समुद्र कहऽ कहलथिन – पटवारिन बजलीह – क्षीर समुद्र । फेर पुछलथिन – ककरा तकैत छियनि ? पतिक अनन्त लाल नाम रहनि । पतिक नाम कोना लितथि तेँ कहलथिन बौआक बापकेँ । ◆



श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

1925